ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

आश्विन २०७८ अक्टूबर २०२१

₹ २०

कविता

विजय पर्व है विजया दशमी

– हरीश दुबे

विजय पर्व है विजया दशमी
महिमा इसकी जानें।
निंदा होती बुरे कर्म की
अच्छाई पहचानें।।

प्रभु राम, लक्ष्मण, सीताजी
वन में संग गए थे।
राज दुलारों के जीवन में
वन प्रसंग नए थे।।

सीताजी को कुटिया में
पाकर निपट अकेली।
छल से रावण साधु वेश में
रचता कपट पहेली।।

किया अपहरण वैदेही का
राम-लखन अकुलाए।
करके सैन्य संगठन प्रभु ने
रण में कदम बढ़ाए।।

लंका जीत हरा कर रावण
सीताजी को लाये।
जय-जयकार हुई अवध में
सबने दीप जलाए।।

– महेश्वर
जि. खरगोन (म. प्र.)

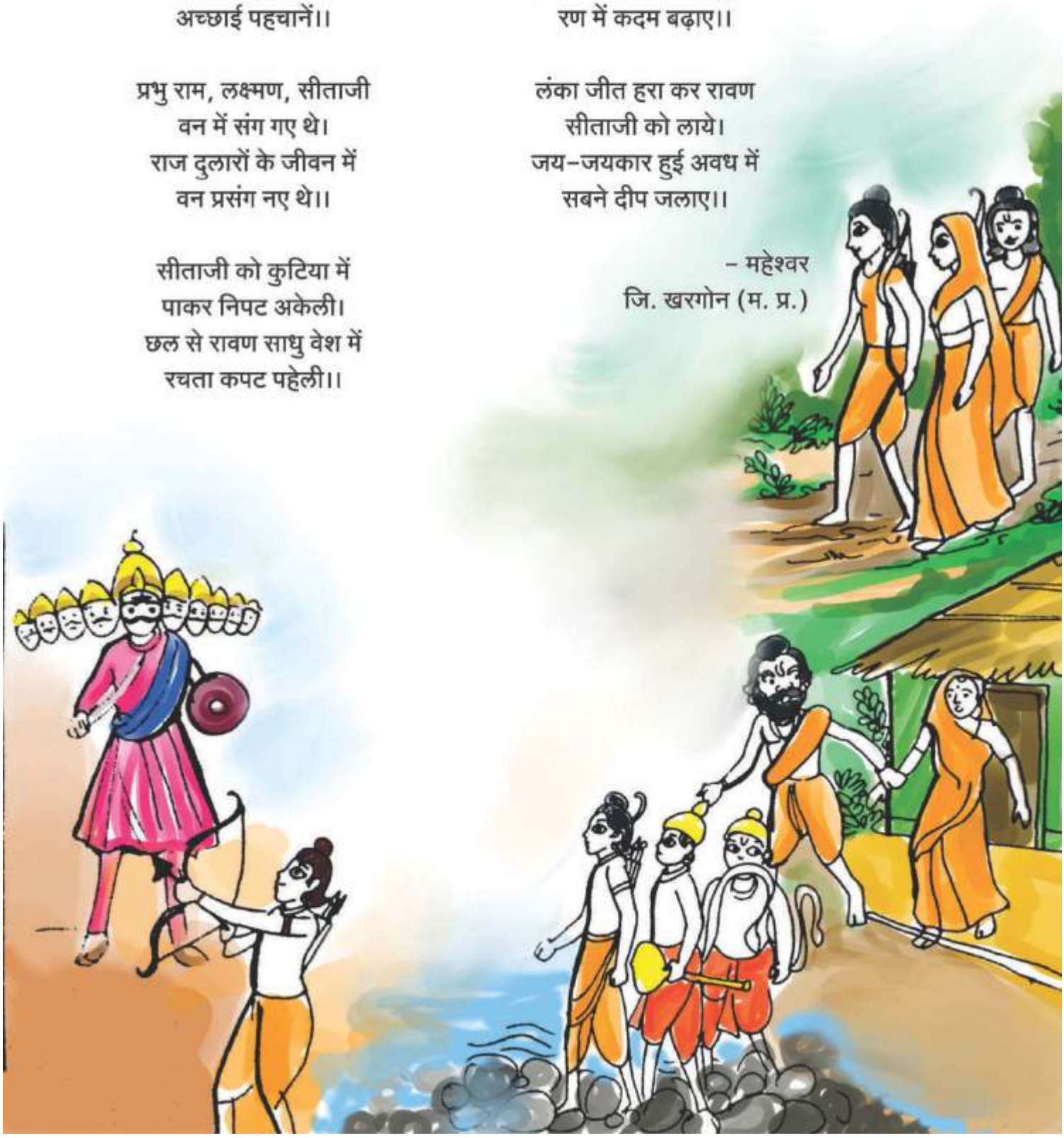

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

आश्विन २०७८ ▪ वर्ष ४२
अक्टूबर २०२१ ▪ अंक ४

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
पन्द्रहवर्षीय	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

दशहरे की बात चलते ही भगवान श्रीराम, महावीर हनुमान आदि के साथ-साथ 'रावण' की भी याद सहज ही आती है। रावण एक ऐसा पात्र है जिसके बिना रामायण अधूरी-सी है। राक्षसी प्रवृत्तियों के कारण रावण को बहुत बुरा माना जाता है लेकिन कई अच्छाईयाँ भी उसमें थी। वह अपने समय का जाना-माना शूरवीर था, वैज्ञानिक था, विद्वान था और बहुत धनवान भी। फिर भी प्रतिवर्ष दशहरे पर उसके पुतले को बुराई का प्रतीक मानकर जलाया जाता है। लेकिन सीखा जाए तो रावण से भी बहुत कुछ सीखा जा सकता है। यह बात स्वयं श्रीरामचन्द्रजी ने अपने भ्राता लक्ष्मण को तब कही थी, जब रावण पराजित होकर रणभूमि में मरणासन्न पड़ा था।

जानते हो राम-लक्ष्मण को राक्षस राज ने अपने जीवन के अनुभव का निचोड़ बताते हुए कहा था ''मेरे जीवन के तीन बड़े महत्वाकांक्षी कार्य थे। पहला मैं चाहता था आग को धूँआ रहित बना दूँ। दूसरा समुद्र के पानी को मीठा बना दूँ। तीसरा धरती को स्वर्ग से मिलाने वाली एक सीढ़ी बना दूँ।'' रावण बड़े खेद के साथ कहता है ''यह तीनों काम मेरे लिए असंभव नहीं थे पर मैं इन्हें अपने लिए बहुत सरल समझकर सोचता रहा कर लूँगा, कभी भी कर लूँगा। इतनी जल्दी क्या पड़ी है। .....और आज मैं अपनी अंतिम श्वासें ले रहा हूँ। इसलिए यदि हम कितने भी सक्षम और सुयोग्य क्यों न हो कभी भी अच्छे कामों को कल के लिए नहीं टालना चाहिए।''

बच्चो! यह कथा किंवदंती के रूप में प्रचलित है। स्वर्ग की कल्पना आज भी किसी को मान्य तो किसी को अमान्य हो सकती है। पर इस कथा का संदेश बहुत ही समझने योग्य है। कबीरदास जी का वह प्रसिद्ध दोहा तो आपको याद ही होगा-

काल करे सो आज कर, आज करे तो अब्ब।
पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब्ब।।

सामान्य व्यक्ति की कल्पना से भी परे के कार्य करने का स्वप्न भी देखना सीमोल्लंघन ही है पर वह तभी सार्थक है जब स्वप्न को संकल्प बनाकर तत्काल उसे साकार करने में जुट जाएँ। ऐसा सीमोल्लंघन ही जीवन में विजयादशमी लाता है। विजयपर्व की अनेक शुभकामनाएँ।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- अनोखा दशहरा -राजीव कुमार त्रिगर्ती ०५
- विजया दशमी -पवन कुमार वर्मा १०
- दोस्त किताबें -इंजी. आशा शर्मा २८
- कहानियों का भण्डार -डॉ. राजेन्द्र पंजीयार ३४
- बुढ़िया की गुड़िया -समीर गांगुली ४०
- मीनू बीनू की जिद -इंजी. ललित शौर्य ४६
- परीक्षा -श्याम नारायण श्रीवास्तव ४८

प्रसंग

- सरदार वल्लभभाई पटेल -डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव ०९

आलेख

- सरस्वती शिशु मंदिर... -डॉ. हरिप्रसाद दुबे २४
- डाक टिकिट की कहानी -डॉ. जमनालाल बायती ३६

लघु आलेख

- डरना क्या -अंकुश्री ४२

बौद्धिक क्रीडा

- गिनो तो जानें -राजेश गुजर ११
- बढ़ता क्रम -देवांशु वत्स २६
- बताओ तो जानें -चाँद मोहम्मद घोसी २९

कविता

- विजयपर्व है विजया दशमी -हरीश दुबे ०२
- लालबहादुर शास्त्री -डॉ. कैलाश सुमन ०८
- किस्सा सुनो बजाओ ताली -डॉ. सुरेन्द्र विक्रम १८
- बापू -रामानुज त्रिपाठी ५१

स्तंभ

- गोपाल का कमाल -तपेश भौमिक १२
- सच्चे बालवीर -रजनीकांत शुक्ल १६
- बाल साहित्य की धरोहर -डॉ.नागेश पाण्डेय 'संजय' २०
- विज्ञान व्यंग्य -संकेत गोस्वामी २३
- छः अंगुल मुस्कान ३२
- आपकी पाती ३२
- सरल विज्ञान -संकेत गोस्वामी ३३
- विषय एक कल्पना अनेक : चींटी
  - चींटी बोली-चींटा बोला -कृष्ण 'शलभ' ३८
  - चींटियाँ -मदन देवड़ा ३९
  - चींटी और चूहा -शिवकुमार गोयल ३९
- शिशु गीत : पुल -डॉ. श्रीकृष्णचंद्र तिवारी ४३
- अशोकचक्र : साहस का सम्मान ४४
- पुस्तक परिचय ५०

चित्रकथा

- मुफ्त का भोजन -देवांशु वत्स १५
- कैसे कैसे लोग -संकेत गोस्वामी २७

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** चालू खाता **(Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

अनोखा दशहरा

– राजीव कुमार त्रिगर्ती

चार साल पहले रोहित के मामा का कार्यालय कुल्लू के पास एक पहाड़ी गाँव में था। वे वहाँ एक जल विद्युत परियोजना में इंजीनियर थे। रोहित से जब भी उनकी बात होती तो वे उसे घूमने के लिए कुल्लू बुलाते परन्तु वहाँ जाने का संयोग नहीं बन रहा था। कभी पिता की व्यवस्ता, कभी घर–रिश्तेदारी समारोहों में उपस्थिति और कभी रोहित के विद्यालय में अवकाश नहीं होने के कारण उनके जाने का कार्यक्रम नहीं बन पा रहा था, परन्तु दो वर्ष पूर्व रोहित ने दशहरे से दीपावली के बीच होने वाले अवकाश के समय पिताजी को कुल्लू जाने के लिए मना लिया। दशहरे से दो दिन पूर्व ही उन्होंने कुल्लू के लिए निकलने का तय किया। वे एक दिन की रेल की यात्रा पूरी करके चण्डीगढ़ पहुँचे। वहाँ से आगे की यात्रा उन्होंने बस से पूरी की। अगले दिन सुबह ही वे कुल्लू पहुँच गए।

अपने मित्रों के साथ इस बार अपने कस्बे के मैदान में आतिशबाजी तथा रावण, मेघनाद और कुम्भकर्ण के पुतलों के दहन को न देख पाने का मलाल तो था, परन्तु रोहित को ज्ञात था कि कुल्लू का दशहरा विश्वप्रसिद्ध है और उसे देखने की उत्सुकता उसके भीतर कुलाँचे भर रही थीं।

मामा के घर पहुँचा तो वहाँ उसके मामा के कार्यालय में काम करने वाले एक कर्मचारी ने राजा जगतसिंह को एक ब्राह्मण से मिले शाप से मुक्ति के लिए सोलहवीं शताब्दी में अयोध्या से रघुनाथ जी को लाने की कथा सुनाई और बताया कि उस समय से ही कुल्लू दशहरे का प्रारम्भ हुआ। रघुनाथ जी कुल्लू राजपरिवार के अधिष्ठित देवता हैं। इनके सम्मान में ही यहाँ दशहरा पर्व मनाया जाता है। यह दशहरा पूरे देश में मनाये जाने वाले दशहरे से अपने स्वरूप में भिन्न है। पूरे देश में दशहरे का पर्व समाप्त हो जाने के उपरान्त ही कुल्लम दशहरे का प्रारम्भ होता है। उसने बताया कि रघुनाथ जी अपने मंदिर से निकलकर अपनी पालकी में सवार होकर दशहरा पर्व स्थल ढालपुर मैदान में आते हैं। इस पूजा–अर्चना में कुल्लू के राजा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

इस पर्व में उपस्थित होने के लिए आश्विन मास के प्रारम्भ में ही आस–पास के सभी देवताओं को कुल्लू के राजा द्वारा रघुनाथजी के सम्मान में उपस्थित होने के लिए बुलाया जाता है। सभी अपनी सजी–धजी पालकियों में बैठकर अपने–अपने गूरों और बजंतरियों के साथ कुल्लू आते हैं। पहले दिन मनाली से हिडिम्बा देवी कुल्लू आती हैं। रघुनाथ की जलेब बड़ी ही सज–धज और पारम्परिक रूप से निकाली जाती है। जिसमें कुल्लू पधारे हुए देवता भी उपस्थित होते हैं। वाद्ययंत्रों की गूँज के साथ सारा वातावरण अलौकिक हो उठता है। मोहल्ला उत्सव में छठें दिन सभी देवता इकट्ठे आकर रघुनाथ जी से मिलते हैं। सातवें दिन रघुनाथजी को व्यास नदी के किनारे ले जाते हैं और लंकादहन किया जाता है। पारम्परिक वेशभूषा में सजे–धजे लोग इस उत्सव को

चार चाँद लगा देते हैं।

इस प्रकार की बहुत-सी नई-नई बातें सुनने के बाद रोहित मन ही मन बहुत प्रसन्न हुआ। वह अधिक प्रसन्न इसलिए भी था क्योंकि उसे यह विश्व-विख्यात दशहरा देखने का अवसर जो मिल रहा था। इस ऐतिहासिक दशहरे के अवसर पर कुल्लू आने के संयोग को देखकर वह स्वयं को धन्य मान रहा था।

अगले दिन वह अपने माता-पिता और मामा के साथ दशहरा देखने गया। चारों ओर लोगों की भीड़ थी। उसने एक स्थान पर देखा कि बहुत से देवता अपनी-अपनी पालकियों में विराजमान हैं। देवताओं के बजंतरियों के नरसिंगों की ध्वनियाँ गूँज रही है। बड़े-बड़े ढोल बजाए जा रहे हैं। नगाड़ों पर बजतीं पहाड़ी तालें वातावरण में मिठास घोल रही हैं। देवताओं के इस समागम को देखकर वह विस्मित हुए बिना नहीं रह सका।

उसने मेले में आगे देखा कि तरह-तरह की चीजों को बेचने के लिए पूरे मैदान के एक बड़े भाग में दुकानें लगाई गईं हैं। कहीं कपड़े बिक रहे हैं तो कहीं अखरोट और मेवे। घरों में प्रतिदिन प्रयोग में आने वाली बहुत सारी चीजें भी वहाँ बिक रही थी।

खाने-पीने की बहुत सी चीजें भी वहाँ बिक रही थीं। उनमें से कुछ चीजें तो रोहित ने पहले से खाई थीं, जबकि कुछ उसके लिए एकदम नई थीं। ऐसी ही एक दुकान पर एक नई चीज बिकती हुई देखकर वह रुका। उसके मामा उसके साथ-साथ चल रहे थे उन्होंने पूछा- ''क्या हुआ रोहित, रुक क्यों गए?''

रोहित ने अँगुली से संकेत करके उस चीज को दिखाया, ''यह क्या है, मामा?''

''अरे इसे सिड्डू कहते हैं। कुल्लू में सिड्डू का बड़ा महत्व है। यह हल्का और पौष्टिक होता है। क्यों न हम सब इसे खाकर कुल्लू दशहरे की यादों को स्वादिष्ट बना लें।'' मामा ने कहा।

''हाँ, इससे बढ़कर और क्या हो सकता है? रोहित ने कहा।

उसके माता-पिता भी उनके समीप आ चुके थे। उन्होंने सिड्डू खाए और रोहित के मामा ने खाते समय ही उनके निर्माण की प्रक्रिया को समझा दिया। देसी घी में सने सिड्डू हरी चटनी के साथ बहुत स्वादिष्ट लग रहे थे। पारम्परिक वेशभूषा में घूमते हुए स्थानीय स्त्री-पुरुषों को देखकर रोहित को बड़ा कुतूहल हो रहा था। इतनी आकर्षक शालें और टोपियाँ देखकर उसे बड़ा अच्छा लग रहा था। वाद्य यंत्रों की धुनों पर लोग नाटियाँ डालते झूम रहे थे। यह सब देखकर रोहित का बालमन थिरकने लगा।

इस तरह वे तीन दिन गाँव से आकर दशहरे के मेले में घूमे और खाने-पीने और खरीददारी का आनन्द लिया। पूरे मैदान में घूमते समय उसकी माता ने बहुत-सी चीजें भी अपने लिए, अपने रिश्तेदारों, परिचितों और मित्रों को भेंट देने के लिए खरीदीं। उनमें से कुछ कुल्लू की शालें और टोपियाँ भी थीं। रोहित ने भी अपने लिए एक कुल्लू टोपी खरीदी। उसने एक स्थान पर एक बाँसुरी भी खरीदी। उसे बाँसुरी बजाना नहीं आता था, पर बाँसुरी की धुन हमेशा उसे आनन्दित करती थी। वह बाँसुरी सीखना चाहता था।

दो दिन उन्होंने रात को होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रमों को भी देखा। इन कार्यक्रमों में वैश्विक नृत्य-संगीत और नाट्यकला को एक मंच पर देखने का अद्भुत अवसर प्राप्त होता है। देश-विदेश से आए कलाकारों की कला को देखकर रोहित मंत्रमुग्ध हो गया। उसे लगा वह किसी दूसरे ही लोक में आ गया है। ढालपुर मैदान में दशहरे के अवसर पर नित नये दृश्य देखकर उसकी प्रसन्नता देखते ही बनती थी। उसे दशहरे के अवसर पर कुल्ल आना सार्थक लग रहा था तथा स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहा था।

आज भी जब उसे कुल्लू दशहरे की याद आती है तो वह अपने कमरे की खिड़की पर खड़ा होकर कुल्लू टोपी पहनकर बाँसुरी बजाने का अभ्यास करता है। अब वह कुछ टूटी-फूटी पहाड़ी धुनें बजाने भी लग पड़ा है। व्यास नदी की निर्मल कलकलाहट उसके हृदय में आज भी गीत गाती है।

– काँगड़ा (हिमाचल प्रदेश)

लाल बहादुर शास्त्री

– डॉ. कैलाश सुमन

जय जवान और जय किसान का,
दिया देश को नारा।
स्वाभिमान और सदाचार से,
ऊँचा शीश हमारा।।

कभी नहीं भोगा सुविधा को,
रहा फकीरी चोला।
थे वामन अवतार दिखाता,
मुखड़ा भोला–भाला।।

खुद प्रधानमंत्री रह करके,
भवन बना ना पाये।
कालिख के घर में रहकर भी,
दाग नहीं लग पाये।।

भ्रष्टाचार तनिक भी उनके,
मन को डिगा न पाया।
शिष्टाचार कर्त्तव्य सादगी,
जीवन भर अपनाया।।

धोती, कुर्ता, सिर पर टोपी,
नेहरु जाकिट भाया।
दुबली पतली–सी काया ने,
जग में नाम कमाया।।

जन्म हुआ दो अक्टूबर को,
थे कलियुग के राम।
लाल बहादुर शास्त्री जी को,
शत शत करें प्रणाम।।

– मुरैना (म. प्र.)

सरदार वल्लभ भाई पटेल

– डॉ. ऋषिमोहन श्रीवास्तव

एक बार वल्लभ भाई पटेल किसी मुकदमे की बहस में लगे हुए थे। तभी उन्हें डाकिए ने एक पत्र दिया। इस पत्र में वल्लभ भाई की पत्नी की मृत्यु का समाचार था। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने पत्र पढ़ा और अविचल भाव से अपनी बहस जारी रखी। जब बहस समाप्त हुई तब वे कोर्ट से बाहर गए उनकी आँखों में आँसु थे। लोगों को तब पता लगा कि उनकी पत्नी का देहान्त हो गया है। वे प्लेग नामक बीमारी का शिकार हो गईं थीं।

एक बार गाँव में भयंकर रूप से प्लेग फैला। उस समय लोग जब गाँव छोड़कर बाहर जा रहे थे तब वल्लभ भाई पटेल ने गाँव में ही पीड़ितों की सेवा–सुश्रूषा का प्रबंध किया। ऐसे में वे स्वयं भी प्लेग के शिकार होते–होते बचे।

गाँधीजी के विचारों का सरदार वल्लभ भाई पर विशेष प्रभाव पड़ा। उन्होंने वकालत छोड़ दी और स्वाधीनता आन्दोलन में जी–जान से जुट गए।

सन् १९१७ में सूखा पड़ा तो किसान लगान देने में असमर्थ हो गए तब वल्लभ भाई ने ही किसानों को संगठित किया व अंग्रेजों को लगान न देने वाले आन्दोलन का नेतृत्व किया। इसमें आपको पूर्ण सफलता मिली।

सन् १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने बढ़–चढ़कर भाग लिया और अनेक बार जेल यात्राएँ भी कीं। सन् १९४७ में जब भारतवर्ष स्वतंत्र हुआ तो सरदार वल्लभ भाई को देश का उप प्रधानमंत्री बनाया गया। उस समय देश की स्थिति अच्छी नहीं थी परन्तु सरदार वल्लभ भाई ने अपनी राजनीतिक चतुराई से रियासतों का भारत में विलीनीकरण करा दिया। इस प्रकार भारत को एक समर्थ राष्ट्र बनाने में सरदार वल्लभ भाई पटेल का

महान योगदान रहा।

देखा जाए तो सरदार वल्लभ भाई पटेल सच्चे अर्थों में राष्ट्रवादी नेता थे। वे अपनी विचारों की दृढ़ता और राजनीतिक क्षमता के कारण **लौह पुरुष** कहलाए। १५ दिसम्बर सन् १९५० को इस महान व्यक्ति का देहावसान हो गया।

– ग्वालियर (म. प्र.)

विजयादशमी

– पवन कुमार वर्मा

इस नये शहर में आये उमा को दो वर्ष हो गए थे। इसके पहले वह अपने बाबा–दादी के साथ रहती थी। विजयादशमी के दिन घर के सभी लोग बाबा–दादी के यहाँ इकट्ठे होते थे। सभी एक साथ इस त्यौहार का आनन्द उठाते थे। यहाँ तो वह माता–पिता के साथ अकेली थी।

वह घर के दरवाजे पर बैठी सोच रही थी– विजयादशमी के दिन सवेरे–सवेरे ही बाबा सभी बच्चों को इकट्ठा करते थे और फिर घर के पीछे सूखी लकड़ी, पुराने समाचार–पत्रों की मदद से रावण का पुतला तैयार करते थे। गप्पू चाचा उस पुतले में छोटे–छोटे पटाखे भी लगा देते थे।

विजयादशमी एक ऐतिहासिक दिन है। आज के ही दिन भगवान राम ने अत्याचारी राजा लंकापति रावण का वध किया था। यह बुराई पर अच्छाई की जीत का दिन है।

शाम के समय सब लोग नये–नये कपड़ों में मेला देखने जाते थे। वहाँ एक बड़े से मैदान में मेला लगता था। रावण का पुतला तो इतना ऊँचा होता था कि पूछो मत! बाबा के साथ मेले में घूमना बहुत अच्छा लगता था। बाबा हमें भगवान राम–लक्ष्मण की भूमिका करने वाले कलाकारों के पास ले जाते थे।

बाबा बड़ी श्रद्धा से उनकी आरती करते थे। हम भी उनके चरण-स्पर्श करते। वहाँ चारों ओर खुशियाँ ही खुशियाँ दिखाई पड़ती थी। बाबा हमें खूब सारे खिलौने और रेवड़ियाँ भी खरीदते थे।

अचानक वहाँ घोषणा होती थी। राम-रावण का युद्ध प्रारम्भ हो गया है। रावण की भूमिका वाला कलाकार भी वहाँ आ जाता था। दोनों धनुष-तीरों द्वारा एक-दूसरे पर वार करते थे। तभी भगवान राम का चलता, एक तीर रावण की नाभि में लगता, और वह राम-राम कहते हुए गिर पड़ता।

फिर कुछ लोग रावण के बड़े पुतले में आग लगा देते। देखते ही देखते पुतला जलकर खाक हो जाता। चारों ओर लोग राम की शक्तियों की जय-जयकार करने लगते! सचमुच वह पल आज भी बहुत याद आता है।

वहाँ से लौटकर हम अपने बनाये रावण के पुतले को जलाते थे। तब बाबा कहते थे- रावण बुराई का प्रतीक है। जैसे हम रावण के पुतले को जलाकर उसकी बुराई का अन्त करते हैं, वैसे ही हमें अपने मन और व्यवहार में आई बुराई का भी अन्त करना चाहिए।

''क्या बात है बेटा? यहाँ क्यों उदास बैठी हो?'' पिताजी ने उमा के सिर पर हाथ रखते हुए पूछा।

''पिताजी! आज मुझे बाबा की बहुत याद आ रही है। बाबा हम बच्चों के साथ रावण का पुतला बनाते थे।'' उमा पिताजी की गोद में सिर रखकर बोली।

''हाँ बेटा! याद तो मुझे भी बहुत आ रही है। लेकिन कोई बात नहीं। चलो। हम दोनों मिलकर यहीं रावण का पुतला बनाते हैं।'' पिताजी उससे बोले! उनकी बात सुनकर उमा खुशी से उछल पड़ी।

''जानती हो बेटा! भगवान राम हमारे आदर्श हैं। उनका पूरा जीवन एक संदेश है। इस त्यौहार की तभी उपयोगिता है, जब हम अपने जीवन को भी भगवान राम की तरह आदर्श बनायें। हम देश-विदेश में जहाँ कहीं भी रहें, आज के दिन को पूरे उल्लास और उत्साह से मनायें!'' पिताजी उसकी ओर देखकर बोले।

''हाँ पिताजी! अब मैं भी अपनी कमियों को दूर करने के लिए पूरे जी-जान से लग जाऊँगी! मुझे आशीर्वाद दीजिए।'' और फिर उमा पिताजी के चरणों की ओर झुक गई।

- वाराणसी (उ. प्र.)

गिनो तो जानें

- राजेश गुजर

भालू खिलौने कुल कितने हैं,
इनकी संख्या बताओ?

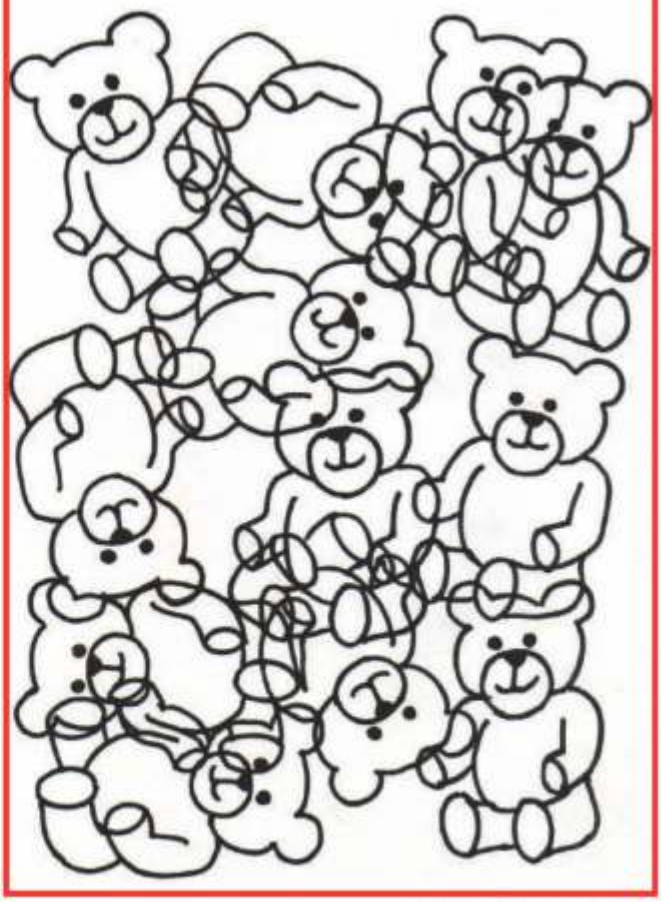

समोसे की कहानी

– तपेश भौमिक

बंगाली समाज में **'गोपाल भांड'** एक ऐसा नाम है, जिनसे शायद ही कोई अपरिचित हो! बाँगला में 'भांड' का अर्थ है विदूषक।

अनुमानत: १७१० ईस्वी से 'गोपाल भांड' बंगाल के नदिया यानी कृष्णानगर के महाराज कृष्णचंद्र के राज–दरबार में मंत्री और विदूषक के पद पर आसीन थे। किसी भी समस्या का हल उनके पास अवश्य होता। बात–बात पर हँसना–हँसाना तो उनके लिए बाएँ हाथ का खेल होता था। इसलिए इन्हें गोपाल–भंडार कहते–कहते ये **'गोपाल भांड'** बन गए।

''इन दिनों महाराज कृष्णचंद्र को बात–बेबात गुस्सा क्यों आता है?'' राजदरबार में लाख टके का प्रश्न था। प्रजा भी डरी हुई थी कि कहीं उन्हें महाराज का कोप–भाजन न बनना पड़े। महाराज के गुस्से के आगे सबकी बोलती बंद हो गई थी।

उन दिनों किसी कारण सुबह–सुबह दरबार लग रहा था। महाराज और दरबारी सुबह का नाश्ता दरबार में ही कर रहे थे। एक सुबह महाराज ने राज–हलवाई को कहलवा भेजा कि उन्हें गरमा–गरम फुलको–लूची (मैदे की पतली पूड़ी) और आलू–दम चाहिए। हलवाई ने बड़े ही यतन से पूड़ी और आलू–दम बनाकर दरबार में भेजा। लेकिन महाराज ने यह कहकर लौटा दिया कि पूड़ी ठंडी पड़ गई है। अब तो हलवाई इतना डरा कि काटो तो खून नहीं! दोबारा, तिबारा, भेजा लेकिन वही शिकायत!

अब हलवाई ने महाराज को प्रसन्न करने की योजना निकाली। उसे स्मरण हो आया कि महाराज तो मिष्ठान्न पसंद करते हैं, क्यों न उन्हें मिष्ठान्न बनाकर भेजी जाए, क्योंकि मिष्ठान्न तो गरम खाने का नियम ही नहीं है। उसने दरबार में अनुमति पाने के लिए संदेश भेजा। लेकिन महाराज को पसंद होने पर भी वे मिष्ठान्न नहीं खा सकते थे। उन दिनों वे मधुमेह की बीमारी से ग्रस्त थे। राज चिकित्सक ने मीठा खाने से मना कर दिया था।

''क्या मजाक बना रखा है हलवाई ने! वह राजाज्ञा का उल्लंघन कर रहा है। वह अपना नियम हम पर लादना चाहता है।''

महाराज ने तुरंत उसे सूली पर चढ़ाने का आदेश दे दिया। अब तो राज–हलवाई के जान के ही लाले पड़ गए।

उसने राजा से विनती की कि उसे क्षमा कर दिया जाए। बहुत गिड़गिड़ाने पर राजा ने उसकी मृत्यु की सजा को बदलकर देश–निकाले की सजा दे दी। उसे तीन रात का समय दिया गया। तीन रात के अंदर ही परिवार सहित उसे राज्य छोड़कर जाना होगा। फिर ऐसा हुआ कि हलवाई की पत्नी ने राजा के पास

प्रार्थना भेजी कि देश त्यागने से पहले उसे महाराज से मिलने का एक अवसर दिया जाए। दो रातें बीत गईं। तीसरे दिन हलवाई की पत्नी ने जाकर महाराज के चरण छुए।

''किस कारण मुझसे मिलने आई हो?'' राजा ने क्रोध में पूछा।

''महाराज! आज्ञा हो तो एक बात कहूँ?'' हलवाईन (हलवाई की पत्नी) ने गिड़-गिड़ाते हुए विनती की। उन्होंने आज्ञा दे दी।

''महाराज! मैं इस प्रकार पूड़ी और आलू-दम बना सकती हूँ कि आधा घंटा बाद खाने पर भी वह गरम ही रहेगा। साथ ही यह सावधानी बरतरने की बात है कि उसे जरा संभल कर खाया जाए, क्योंकि अधिक गरम मुँह में डालने पर जीभ जलने का डर है।'' हलवाईन ने आत्मविश्वास से भर कर कहा।

महाराज कृष्णचंद्र को कुछ आश्चर्य हुआ, उन्होंने दरबार के विशेष सदस्य गोपाल की ओर मुड़कर देखा। गोपाल ने कुछ न कहकर केवल सिर हिला दिया। इसका अर्थ यह था कि हलवाईन को एक अवसर देकर देखना चाहिए कि वह कौन-सा गुल खिलाती है? महाराज ने आज्ञा दे दी। शर्त यह लगा दी कि जैसे ही दरबार से सूचना जाए वैसे ही तुरंत उनके लिए नाश्ता बनाकर भेजा जाए।

''जो आज्ञा महाराज, आशा है कि मैं आपको अवश्य संतुष्ट कर पाऊँगी।''

यह कहकर वह फिर एकबार महाराज के चरण छूकर सीधे रसोई की ओर चली गई। गोपाल ने केवल मुस्कुराकर मंत्री की ओर देखा।

''सबसे पहले मैं चखकर देखूँगा कि वह खाद्य सामग्री महाराज के खाने योग्य है भी या नहीं।'' मंत्रीजी ने गोपाल की चुप्पी को आड़े हाथों लेते हुए कहा।

इस बार भी गोपाल चुप ही रहे। गोपाल की चुप्पी को मंत्री अपनी हेठी समझने लगा। वह मिर्च-मसाले-सा जलकर दाँत किट-किटाता रहा और गोपाल मुस्कुराता रहा।

हलवाईन ने राजा के रसोइये को बुला भेजा और मैदा सान कर उससे पतली और छोटी पुड़ियाँ बेलने को कहा। हलवाई तो इतना डरा हुआ था कि उसके हाथ-पैर सुन्न पड़ने की परिस्थिति आ गई। अब हलवाईन ने आलू-दम कुछ सूखा हुआ-सा बनाया, फिर उसने उन्हीं बेली गई कच्ची पुड़ियों में आलू दम के पूर भर-भरकर बड़े-बड़े पान के बीड़े जैसी बड़ियाँ बनाने लगी। वे बड़ियाँ सम-बाहु त्रिभुज-सी तिकोनी मोटी-मोटी दिख रही थीं। रसोइया भी कम डरा हुआ न था! वह भी काँपने लगा था यह सोचकर कि न जाने आगे क्या हो! हलवाई को तो हलवाईन के साहस देखकर चक्कर आने लगे थे। अब रसोइया और हलवाई जितना डरे हलवाईन उतना ही उनका मजाक बनाए। उसे पूरा विश्वास था कि वह अवश्य सफल होगी।

राजा जी की आज्ञा आते ही हलवाईन ने पहले ही समबाहु त्रिभुज की आकृति वाले पान के बीड़े नुमा आलू-दम भरे हुए पुड़ियों को खौलते घी में डाल दिया।

''छनन-छन! छनन-छन!!'' पूड़ी की बड़ी-बड़ी तिकोनी बड़ियाँ अपनी नाच दिखाने लगीं। वे जितनी बड़ी बनी थीं उससे भी बड़ी मोटी-मोटी बन गईं। यह देख हलवाई और रसोइया दोनों के चेहरों पर प्रसन्नता की रेखाएँ खींच गईं। हलवाईन ने वैसी ही दस बीड़े-नुमा पुड़ियाँ बना डाली। अब महाराज के सामने उन्हें परोसना था। हलवाई और रसोइये ने पहले ही इंकार कर दिया कि वे इस कार्य में सहयोग नहीं कर सकते। एक बड़ी-सी थाली में उन्हें सजाकर हलवाईन स्वयं ही दरबार में ले गई।

महाराज ने जब उन्हें देखा तो उनकी आँखें फटी की फटी रह गईं। ''इनके नाम क्या है? खाने से पहले इनके नाम भी तो जान लूँ।'' महाराज ने मुस्कुराकर पूछा।

''इनके नाम 'समभुजा' है, इसे धीरे-धीरे मजे से चबा-चबाकर पूरा स्वाद लेते हुए खाएँ। कदापि एक ही बार में मुँह में न डालें, नहीं तो जीभ जल जाएगी।'' हलवाईन ने पूरे आत्मविश्वास से भरकर कहा। नियमानुसार पहले मंत्रीजी को चखना था। उन्होंने हलवाईन की बातों को नहीं माना और पूरा-का-पूरा समभुजा एक बारगी मुँह में ठूँस लिया। अरे यह क्या! मंत्रीजी का मुँह तो खुला-का-खुला रह गया! गरम इतना कि मुँह के सामने हाथ ले जाकर पंखा करने लगे। महाराज तो मंत्री की हालत देखकर ठठाकर हँस पड़े। फिर उन्होंने बड़ी सावधानी से एक समभुजा को तोड़कर उसका छोटा-सा टुकड़ा मुँह में डाला। अब तो दृश्य यह था कि महाराज इधर-उधर बिना देखे एक के बाद एक का स्वाद लेने लगे। मंत्री ने किसी तरह पूरा बीड़ा निगलकर ठंडा पानी मंगवा लिया। ऐसे समय पर हलवाईन उन्हें कुछ कहती कि गोपाल ने इशारे से मना कर दिया। उसने अब कुछ पूछने का साहस नहीं किया। दरबारियों की आँखें एकबार महाराज की ओर घूम जाती तो दूसरी बार साहसी हलवाईन की ओर।

महाराज ने खा-खाकर कुछ भी न कहा। उन्होंने केवल यह किया कि अपने गले से मोतियों की तीन-तीन लड़ियाँ निकाली और हलवाईन के गले में डाल दी। तब तक राज रसोई तक सूचना पहुँच गई कि महाराज बहुत प्रसन्न हैं। हलवाईन ने और पचास समभुजा छानकर ले आई। समभुजा खाने का जो दौर चला तो गोपाल जीभ लपेट-लपेटकर मुँह बना-बनाकर समभुजा खाने लगा। उधर मंत्रीजी का लाल-पीला चेहरा देखने लायक था। वे केवल सबको आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगे।

इस पर इधर मंत्रीजी की जग-हँसाई खूब होने लगी तो उधर हलवाईन की बड़ाई के पुल बाँधे जाने लगे। महाराज ने उसे राज-रसोई में मुख्य रसोइये की नौकरी दे दी, साथ ही दण्ड भी वापस ले लिया।

महाराज कोई छह माह तक लगातार इस सम-भुजा का आनंद लेते रहे। इन दिनों शाम होते ही महाराज के होंठों पर हँसी खेलने लगती थी। दरबार में शांति विराजने लगी। जनता ने चैन की सांस ली।

यह बात लगभग ढाई सौ वर्ष पुरानी है। उन्हीं दिनों कलिंग-प्रदेश, वर्तमान ओड़ीसा राज्य में गिरिधारी बेहरा नामक एक हलवाई अपनी धर्म-पत्नी धरित्री देवी के साथ बंगाल के कृष्णानगर राज्य के राज-दरबार में आए थे। उन्हें महाराज ने राज-हलवाई के रूप में अपनी सेवा में रख लिया था। गोपाल ने भी धरित्री देवी का लोहा मान लिया। उसने भी धरित्री देवी के सम्मान में बड़ाई के पुल बाँध दिए।

हलवाईन की सम-भुजा ही बाद में चलकर समोसा या सिंघाड़ा नाम से प्रसिद्ध हो गया। लेकिन यह दुःख की बात है कि धरित्री देवी का नाम काल के गाल में समा गया जब कि हमारे गाल में अगर सिंघाड़ा या समोसा हो तो क्या कहने!

अब आपसे यह पूछा जाए कि समोसे की माँ या आविष्कारक कौन है तो आपका उत्तर क्या होगा?

- गुड़ियाहाटी, कूचबिहार (पं. बंगाल)

मुफ्त का भोजन

चित्रकथा: देवांशु वत्स

नरभक्षी से मुकाबला

– रजनीकांत शुक्ल

गुजरात राज्य का दाहोद जिला उसके फतेहपुरा तालुके के अन्तर्गत एक गाँव आता है। जिसका नाम माता फालिया है। छोटा सा गाँव गिने चुने घर... उसमें बाबूभाई कालूभाई मशर का भी घर था।

वह बाईस मार्च २००२ का दिन था। जब सारे दिन की भागमभाग के बाद शाम का अँधेरा वातावरण में छाने लगा था। बाबूभाई का परिवार खेतों के पास ही झोपड़ी डालकर रहता था।

इस तरह खेतों की रखवाली भी होती रहती थी। और उनके रहने की समस्या भी हल हो रही थी। हालाँकि वहाँ खुले में लेटने से कुछ लाभ था तो अनेक परेशानियाँ भी थीं। खाना–खाकर जैसे ही रात बढ़ने लगी तो कालूभाई मशर के बच्चे बाहर ही लेट गए। जिनमें दो वर्ष का विपुल और तेरह वर्ष की गुड्डीबेन थी। पास में ही पालने में एक छह महीने की नन्हीं बच्ची भी लेटी हुई थी।

गुड्डीबेन दुबली–पतली साँवली साधारण–सी शक्ल–सूरत की लड़की थी। घर में बड़ी थी इसलिए अपने छोटे भाई और बहन की देखभाल करने की जिम्मेवारी भी उसी की थी। घर के बड़े लोग जब बाहर चले जाते तो वही उनकी सारे दिन देखभाल करती रहती थी।

उस दिन भी बिस्तर पर लेटने से पहले गुड्डी ने उठकर छोटी बहन के पालने के पास जाकर उसको चादर ओढ़ाई और फिर उसी के साथ लेटे विपुल के सिर पर हाथ फिराकर उसे प्यार किया। इसके बाद वह धीरे से अपने बिस्तर पर लेटने के लिए आ गई। उसके मन में अपने छोटे भाई और बहन के लिए बहुत प्यार था। पालना छोटा था नहीं तो वह छोटी के साथ ही सो जाती। मन में मीठे–मीठे विचारों में डूबी हुई गुड्डी नींद की दुनिया में खो गई।

अचानक उसकी आँख रात में तब खुली जब उसे अपने आस–पास कुछ आवाजें सुनाई दी। आँख खुली और उसने अपनी खाट के पास हलचल अनुभव की। अँधेरा था इसलिए एकदम से तो कुछ दिखाई नहीं दिया किन्तु जैसे ही सामने का दृश्य दिमाग में बैठा तो वह एकदम से सन्न रह गई।

सामने एक चौपाया जंगली जानवर उसकी छोटी बहन और भाई के पालने की ओर बढ़ रहा था। उसके मान में खतरे की घंटी बज उठी इसी के साथ वह बिजली की फुर्ती से साथ बिस्तर से तुरन्त उठ खड़ी हुई। उसने देखा कि उस जानवर ने विपुल के सिर को अपने जबड़ों में फँसाया। अब वह उसे पालने से नीचे की ओर खींचने लगा।

उसकी ओर दौड़ती गुड्डी बड़े जोर से चीख पड़ी– हट, हट, भाग छोड़ उसे...

मगर गुड्डी की बात का मानो उस पर कोई असर ही नहीं हुआ। उसने विपुल को पालने से नीचे

खींच लिया। वह बहुत भयानक दृश्य था। रात के अँधेरे में एक ओर वह जंगली जानवर अपने जबड़ों में अपने शिकार के रूप में विपुल के सिर को दबाए हुए था। दूसरी ओर दुबली–पतली तेरह वर्ष की गुड्डी अपने प्यारे भाई को बचाने का प्रयत्न जी जान से कर रही थी।

पास पहुँचकर गुड्डी अपनी पूरी ताकत से उस जानवर पर टूट पड़ी। वह अपने हाथों से उसे पीट रही थी। पर इससे उस पर क्या असर होता। सीधे–सीधे से देखने में उन दोनों का कोई बराबरी का मुकाबला नहीं लग रहा था किन्तु गुड्डी को किसी भी परिस्थिति में अपने भाई को उसके पँजे से छुड़ाना था।

तभी उसकी निगाह अपनी छोटी बहन की ओर गई। जिसे उस जानवर ने विपुल पर हमले से पहले खा लिया था। उसका अधखाया शरीर का हिस्सा वहीं पड़ा था। जिसे देखकर एक बार तो वह काँप गई किन्तु फिर उसकी आँखों से चिंगारियाँ निकलने लगीं।

उसने इधर–उधर नजर दौड़ाई पास में पड़े एक डण्डे पर उसकी दृष्टि पड़ी। उसने झपट कर उस डण्डे को उठाया और बहुत बुरी तरह उस जानवर पर पूरी ताकत से वार करने लगी।

एक दो तक तो ठीक था किन्तु लगातार पड़ने वाले इन प्रहारों से वह जानवर घबरा गया। उसने विपुल को छोड़ा और गुड्डी की ओर रुख किया। किन्तु यह उसकी भूल साबित हुई। गुड्डी उस समय रणचण्डी बनी हुई थी और उसे सबक सिखाने के लिए तैयार खड़ी थी।

उसने अब गुड्डी पर हमला कर दिया जिससे गुड्डी लड़खड़ाई अवश्य किन्तु उसने अपना आक्रमण जारी रखा। जब उसके मुँह पर सामने से डण्डे के गुड्डी के हाथों पूरी ताकत से जोरदार प्रहार हुए तो वह घबरा गया और उसने वहाँ से भाग निकलने में ही अपनी भलाई समझी।

इस हादसे में विपुल तो घायल था ही गुड्डी को भी चोंटें आईं। लोगों के जमा होने पर उन दोनों को अस्पताल में भर्ती करवाया गया। जहाँ उनका उपचार किया गया। गुड्डी के अपूर्व साहस से उसके भाई विपुल की जान बच गई। हालाँकि गुड्डी को अफसोस था कि कुछ देर पहले उसकी आँख क्यों नहीं खुल सकी। अगर ऐसा होता तो वह अपनी बहन की जान भी बचा सकती। गुड्डी के इस साहसिक ढ़ंग से उस खतरनाक जंगली जानवर का मुकाबला करने के लिए उसकी सराहना की गई। उसका नाम वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित किया गया। देश के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उसे वर्ष २००२ का राष्ट्रीय बाल वीरता 'गीता चोपड़ा पुरस्कार' देकर सम्मानित किया।

नन्हें मित्रो!

अपनी पर आएं तो फिर हम मौत से भी भिड़ जाएं।
जोश मारता लहरें, तनने लगतीं रक्त शिराएं।।
नन्हीं चींटी भी हाथी को कर सकती है बेदम।
कर सकते हैं बहुत अगर अपनी पर आ जाएं हम।।

– नई दिल्ली

किस्सा सुनो बजाओ ताली

– डॉ. सुरेन्द्र विक्रम

गधा, सियार, भेड़िया, गीदड़, बात सभी की अजब, निराली।
शौक सभी का अपना–अपना, किस्सा सुनो, बजाओ ताली।।

गधा काम करता धोबी का, गीदड़ दिन भर घूमा करता।
मूर्ख भेड़िया पड़ा माँद में, सारा दिन खर्राटे भरता।।

रोज रात को दस बजते ही, हुआँ–हुआँ आती आवाज।
गधा, भेड़िया, गीदड़ तीनों, समझ चुके थे इसका राज।।

दूर–दूर फैली हरियाली, खेतों में खूब खीरा ककड़ी।
उसके पहले खुली जगह में, बन जाती तीनों की तिकड़ी।।

गधा तोड़ता बाड़ खेत की, आसानी से सब घुस जाते।
मिलकर खाते खीरा ककड़ी, हँस–हँस आपस में बतियाते।।

पता नहीं क्या हुआ, गधे को, शुरु कर दिया राग मिलाना।
बोला– 'तुम सब सुनो साथियो! कितना सुंदर मेरा गाना।।'

तभी भेड़िया हँसकर बोला– 'क्यों करते इतना हंगामा?'
चोरी से खाने आए हो, बंद करो यह अपना ड्रामा।।

भला इसी में सबका होगा, हम चुपचाप ककड़ियाँ खाएँ।
भर जाएगा पेट सभी का, अपने-अपने घर को जाएँ।।

गधा अड़ा था अपनी जिद पर, जोर-जोर से लगा रेंकने।
'मैं संगीत शास्त्र का ज्ञाता', ऊँची-ऊँची लगा फेंकने।।

गीदड़ चला गया था पहले, ठीक बाद में गया सियार।
खड़ा भेड़िया लगा सोचने, यह खाने वाला है मार।।

तभी नींद से जागा मालिक, और जग गए कई किसान।
टॉर्च जलाकर खेत में देखा, वहाँ पड़े थे कई निशान।।

गुस्से में आए किसान सब, जोर-जोर से मारा डंडा।
गधा उलटकर गिरा वहीं पर, उसका जोश हो गया ठंडा।।

एक मोटी जंजीर मँगाकर, तब मालिक ने उसको जकड़ा।
चारों ओर खड़े थे दर्शक, सबने मिलकर गधे को पकड़ा।।

किसी तरह जंजीर तुड़ाकर, भागा गधा गाँव की ओर।
मन ही मन में सोच रहा था, बिना बात क्या करना शोर?

– लखनऊ (उ. प्र.)

नए गगन के नए सूर्य : नागार्जुन

प्रस्तोता – डॉ. नागेश पांडेय 'संजय'

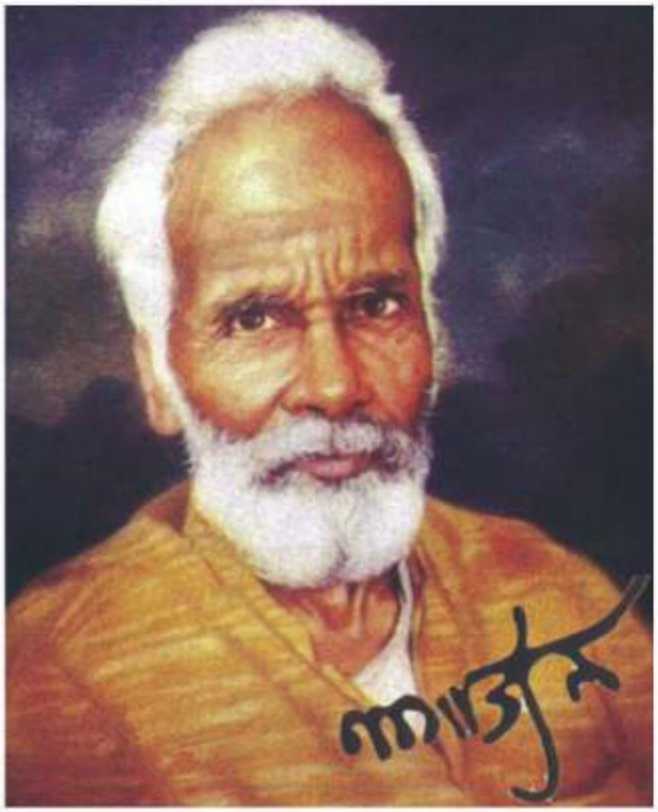

प्यारे बच्चो,

बाबा नागार्जुन (३० जून १९११–५ नवम्बर १९९८) का नाम आपने सुना होगा? जब आप बड़ी कक्षाओं में जाओगे तो कविता, कहानी, उपन्यास, संस्मरण, यात्रा वृत्तान्त और निबंध आदि विधाओं में उनकी अनेक रचनाएँ पढ़ने को मिलेंगी।

वे हिन्दी, मैथिली, संस्कृत, पालि, अपभ्रंश, तिब्बती, मराठी, गुजराती और बांग्ला भाषाओं के जानकार थे।

नागार्जुन का जन्म दरभंगा जिले के तरौनी में हुआ था। उनके बचपन का नाम ठक्कन था। इनके पिता गोकुल मिश्र ईश्वर के अनन्य भक्त थे। उन्होंने देवघर में स्थित ज्योतिर्लिंग के नाम पर इनका नाम वैद्यनाथ रखा। बचपन में ही माता का देहांत हो जाने से उनका जीवन संघर्षमय हो गया। लेकिन वे परिस्थितियों से कभी नहीं हारे। उन्होंने अपनी लगन और परिश्रम के बल पर खूब नाम कमाया। उनकी पहली रचना १८ वर्ष की अवस्था में मैथिली भाषा में प्रकाशित हुई। उन्होंने 'वैद्यनाथ मिश्र', 'यात्री' और 'नागार्जुन' नामों से विपुल साहित्य–रचना की। 'पत्रहीन नग्न गाछ' पुस्तक के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

बाबा नागार्जुन ने बाल–साहित्य भी लिखा। उनकी बाल कहानियों की पुस्तक 'कथा मंजरी' (प्रकाशन : आत्माराम एंड संस, दिल्ली) दो भागों में प्रकाशित हुई। इसमें सरल–सहज, चुटीली और मनोरंजक बाल कहानियाँ हैं। किशोरों के लिए उनकी पुस्तक मर्यादा पुरुषोत्तम राम (प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, दिल्ली) भी बहुत रोचक है, जिससे हमें जीवन को अनुशासित ढंग से जीने की प्रेरणा मिलती है।

आइए, हम उनकी लिखी दो बाल कहानियाँ पढ़ते हैं–

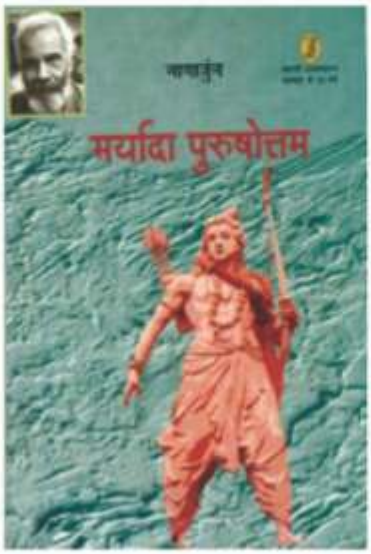

मेहनत का फल

एक थी चिड़िया, एक था कौआ।

कौए ने कहा– ''आ री चिड़िया! हम साझे की खेती करें।''

चिड़िया बोली– ''ठीक तो कहते हो।''

कौए ने कहा– ''तू चलती चल, मैं आता हूँ। चिकनी रोटी खाता हूँ। नीम की डाल पै बैठा हूँ।''

चिड़िया हल–वल जोत भी आई। कौआ बैठा ही रहा। चिड़िया ने कहा– ''चल रहे कौए, बीज बो आएँ अपने खेत में।''

कौए ने फिर वही उत्तर दिया–

''तू चलती चल मैं आता हूँ।
चिकनी रोटी खाता हूँ।
नीम की डाल पै बैठा हूँ।।''

चिड़िया ने बीज बिखेर दिये खेत में। लेकिन कौआ नहीं आया।

कुछ दिनों के बाद चिड़िया ने कहा– ''चल रे कौए! घास–फूस उग–उग आई है। खेत को निरा आएँ।''

कौए ने कहा– ''तू चलती चल, मैं आता हूँ....

कौआ नहीं आया, कौए तो चालबाज होते ही हैं। चिड़िया ने चोंच से घास–फूस नोंची–उखड़ी, बाजरे के पौधे लहराने लगे। थोड़े दिन बाद फसल तैयार हो गई तो चिड़िया बोली– ''चल रे कौए! फसल काट लाएँ।''

कौए ने कहा– ''तू चलती चल.....''

चिड़िया बेचारी भोली–भाली ठहरी, कौआ ठहरा धोखेबाज! वह चुपचाप फसल भी काट लाई खेत से। अकेले ही उसने दाने निकाले और बाजरे की ढेर लगा दी। फिर उसने कौए से कहा– ''चल, बाँट तो ले।''

कौआ आया। दोनों ने फसल आधी–आधी बाँट ली।

चिड़िया ने अपने दाने उठाकर घोंसले में भर लिये। कौओं के न घर होते हैं न घोंसले। उसके दाने वहीं पड़े रह गये। जब बादल बरसे तो कौए के सारे दाने बहकर चिड़िया के घर आ गये।

वह नीम की डाली पर काँव–काँव करता रह गया।

●

सावन की बूँद

मोहन अपने आँगन में खेल रहा था।

दिन थोड़ा ही बाकी था। सावन के बादल आसमान में सैर कर रहे थे। हवा भी चल रही थी कि इतने में पानी की बड़ी–सी एक बूँद मोहन की कलाई पर आ पड़ी।

''कहाँ से यह पानी मुझ पर पड़ा है?'' मोहन चीख उठा। उसने इधर–उधर नजर दौड़ाई। कोई दिखाई नहीं पड़ा। वह कलाई पर पड़ी बूँद को देखता रहा।

पानी की वह बड़ी बूँद मोती की तरह चमक रही थी मोहन की कलाई पर।

उसने पूछा– ''तू कहाँ से आयी है?''

''आसमान से''–बूँद बोल उठी।

''आसमान से?''

''हाँ! आसमान से। बादल की गाड़ी पर बैठकर वहाँ में घूमती फिरती हूँ।''

''यहाँ कैसे आई?''

''पवन के पंखों पर सवार होकर।''

''रहती कहाँ है तू?''

''कभी आकाश में, कभी जमीन पर, कभी झील में कभी नदी में और कभी सागर की गोद में।''

''तुझे ऊपर कौन पहुँचाता है।''

''सूरज महाराज!''

''ऊपर अकेले तो जी बड़ा घबराता होगा?''

''अकेले? अकेली नहीं हूँ मैं। मेरी जैसी अनगिनत बूँदें रहती हैं। उजले और कजरारे बादलों पर सवार होकर वहाँ हम दिन रात सैर करती फिरती हैं।

''फिर तो ऊपर बड़ी मौज रहती होगी?''

''मौज को कुछ मत पूछो, लेकिन वहाँ ठंड बड़ी लगती है। हम एक–दूसरे से चिपककर बैठी रहतीं हैं।''

''पर यहाँ तू आई कैसे?''

''बादल की गति तेज हो गई, हम हिलने–डुलने लगीं। बाकी बूँदों का पता नहीं, मैं इधर नीचे की ओर ढुलक आई बस, मुझे जाने दो। फिर कभी आऊँगी।''

''आओगी न?''

''अवश्य! अवश्य!!''

''नहीं, तुम भूल जाओगी।''

''अजी नहीं, कैसी बात करते हो तुम भी।''

इसके बाद बूँद गायब हो गई। मोहन इधर–उधर ताकता रह गया। सावन के कजरारे बादल आकाश में तैर रहे थे और ठंडी–ठंडी हवा चल रही थी। मौसम बड़ा सुहावना लग रहा था।

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

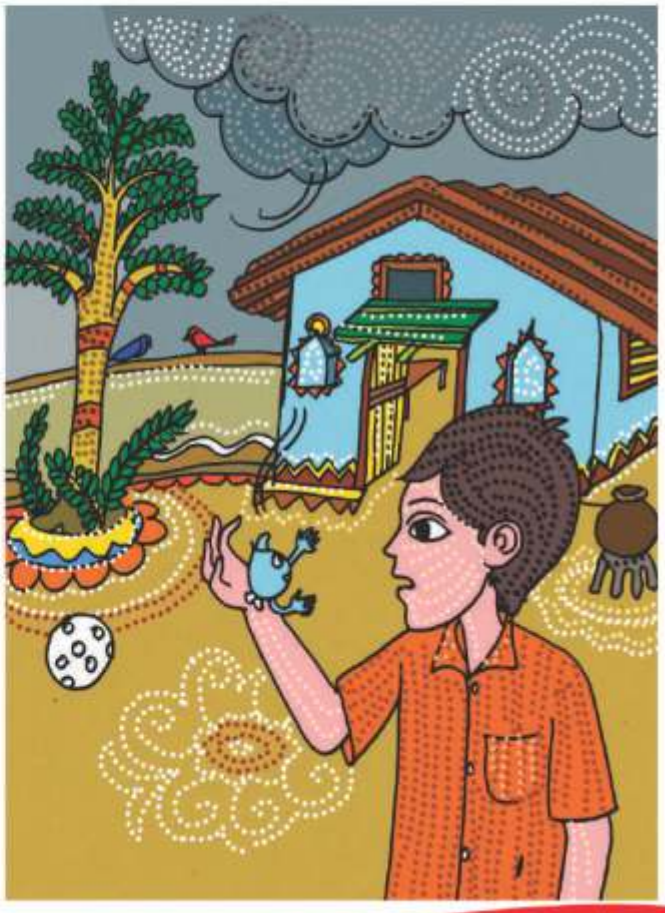

विज्ञान व्यंग

-संकेत गोस्वामी

सरस्वती शिशु मंदिर योजना के भगीरथ : गाँधीजी

– डॉ. हरिप्रसाद दुबे

युग निर्माता श्री कृष्णचन्द्र गाँधी का दृढ़व्रती जीवन राष्ट्र निर्माण और शिक्षा के क्षेत्र में उच्च कोटि का था। इनका जन्म आश्विन शुक्ल विक्रम संवत् १९७८ विजया–दशमी सन् १९२१ को मेरठ के प्रसिद्ध जत्ती वाड़ा मुहल्ले के अग्रवाल परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम मुरारी लाल अग्रवाल था। बचपन से ही जीवन मूल्यों और आदर्शों के प्रति समर्पित श्री कृष्णचंद्र सत्य के प्रति आकृष्ट होते गये।

क्रान्तिकारियों की जीवन गाथाओं में रुचि लेने वाले वे चिंतनशील और मौन साधक थे। उनके अध्यापकों ने उन्हें 'गाँधी' उपनाम प्रदान किया। सन् १९३९ में वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आये। स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनंतर १९४५ में जिला प्रचारक जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में मथुरा में संघकार्य करने लगे।

मधुरा में कंसकिला के रिक्त स्थान को स्वच्छ करके दुर्ग शाखा लगाना आरंभ किया। इस समय यह केवल दुर्ग नाम से जाना जाता है। गाँधी कुशल और साहसी तैराक थे। वृंदावन में १९४६ के संघ प्रशिक्षण में आई अनेक बाधाओं का सामना श्री कृष्णचंद्र ने किया। कारागार में गाँधी जी का धैर्य, नेतृत्व कार्यक्रमों की रचना अद्भुत थी। न्यायालय में संघ को निर्दोष घोषित किया गया। स्वयंसेवकों को मुक्त किया गया। गाँधी जी का नेतृत्व विलक्षण था। १९५० तक वे मथुरा में रहे। उनका कार्यकाल अद्वितीय था।

श्री कृष्णचंद्र गाँधी १९५२ में गोरखपुर के विभाग प्रचारक थे। वे सरस्वती शिशु मंदिर योजना के शुभारंभ में स्वयं लिखते हैं– ''सन् १९५२ में अप्रेल का महीना था। शिशु शिक्षा के संबंध में विचार करने के लिए गोरखपुर में प्रबुद्ध नागरिकों की एक बैठक बुलाई गई। इससे पूर्व भी शिशु शिक्षा के संबंध में विचार मंथन तो अनेक हृदयों में चल रहा था परन्तु उसे कार्य रूप देने की घड़ी तभी आई जब सभी विचारक और कार्यकर्त्ता उक्त बैठक में एकत्र हुए। शिशु विद्यालय की स्थापना का निर्णय होते ही उसके नामकरण का विचार सामने आया...

क्रमश: विचार के उपरांत यह निर्णय हुआ कि विद्यालय का नाम **सरस्वती शिशु मंदिर** रखा जाए। विद्यालय के लिए एक स्थान भी मिला किराए पर। कमरे थे किंतु टूटे हुए। चारों ओर गंदगी थी। पैसा पास में था नहीं। इतना भी नहीं कि मजदूरी देकर वह पूरी तरह साफ भी करवा लिया जाए।

पर उत्साह की पूँजी तो अक्षय थी। विद्यालय की प्रबंध समिति अनेक सदस्य और आचार्य कुदाल–फावड़े लेकर सफाई अभियान में जुट गए। साधारण कक्षाएँ लगाने योग्य स्थान ठीक हो गया।

आज उसी स्थान पर शिशु मंदिर का भवन खड़ा है। क्या कोई कल्पना कर सकता है कि आरंभ में इस स्थान की क्या दशा थी।

श्री कृष्णचंद्र गाँधी स्वयं किसी भी कार्य का

श्रेय नहीं लेते थे। श्रेय केवल संघ को देते थे। ईश्वर की कृपा को। इस योजना के जनक जब कि वे स्वयं थे। यह विद्यालय आरंभ कराकर केन्द्र में रहकर उसे दिशा दी। उनका तप, धैर्य, आशावादिता लक्ष्य अनुसंधान, निष्ठा, औदार्य, प्रेम अनूठा रहा। इस योजना के वे ही साथी थे। इसके बाद रामपुर, नैनीताल या अन्यत्र जहाँ भी वे गये शिशु मंदिर खोलते रहे। यही शिशु मंदिर बाद में विद्या मंदिरों के रूप में विकसित हुए।

माननीय भाऊराव देवरस ने श्री कृष्णचंद्र गाँधी की क्षमता को ध्यान में रखकर १९६९ में सरस्वती शिशु मंदिर योजना का ही प्रमुख बनाकर लखनऊ भेजा। गाँधी जी ने निराला नगर में भारतीय शिक्षा शोध संस्थान स्थापित किया। यहाँ सरस्वती कुँज परिसर के सभी भवन सरस्वती शिशु, विद्या मंदिर भवन गाँधीजी की ही देन है।

भारतीय शिक्षा के लिए आदर्श और उपयोगी पाठ्यक्रम बनाने के लिए इन्होंने मार्गदर्शन किया। आचार्य शिष्य संवाद शैली में भारतीय संस्कृति का व्यापक ज्ञान पुस्तक रूप में आया। ''इतिहास गा रहा है'' जैसी इतिहास से संबंधित पुस्तकें गाँधी के एक प्रिय स्वयंसेवक ने मथुरा से प्रकाशित करने का प्रस्ताव किया।

इस स्वयंसेवक का पुस्तक मुद्रण का अपना व्यवसाय था। सरस्वती शिशु मंदिर प्रकाशन नामक संस्था गठित हुई १९७८ में अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान विद्या भारती का गठन किया गया। इस समय इसमें हजारों विद्यालय हैं। इसका केंद्रीय कार्यालय दिल्ली में है।

श्री कृष्णचंद्र गाँधी के संयोजन में दिल्ली में १९७८ में एक विराट शिशु संगम आयोजित किया गया। इसके मुख्य अतिथि राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी थे। गणवेशधारी शिशु सेनापति ने उनका स्वागत किया। राष्ट्रपति ने सरस्वती शिशु मंदिर योजना की भूरि-भूरि प्रशंसा करके भारत के भविष्य की आशा बताया।

वनवासी और आदिवासी क्षेत्र असम, अरुणाचल, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, उड़ीसा झारखण्ड छत्तीसगढ़ में विद्यालय खोलने का कार्य श्री कृष्णचंद्र गाँधी को सौंपा गया। गाँधी जी ने लखनऊ के शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय में जाकर कहा- ''मुझे एक ऐसा आचार्य चाहिए जो हाफलाँग नामक स्थान में जाकर विद्यालय प्रारंभ करे। उस स्थान पर अनेक प्रकार का कष्ट होगा। शारीरिक कष्ट तो सहा जा सकता है, किन्तु मानसिक कष्ट भी सहना पड़ेगा। नन्हें-मुन्ने जनजाति बालकों की सेवा करनी होगी अपना सब कुछ त्यागकर शिक्षा एवं सेवा का कार्य खड़ा करना होगा।

आप में से कौन-कौन ऐसे आचार्य हैं जो इस आह्वान को स्वीकार करेंगे ? दूर, अपनों से दूर अपने बंधुओं के अपार कष्टों से प्रवाहित अश्रुओं को अपना बनाकर क्या कोई आचार्य उनके आँसुओं को पोंछने के लिए आगे आयेगा ? उन्हें ईसाई मिशनरी के चंगुल से छुड़ाकर भारत माता के प्रति समर्पित भाव के निर्माण जैसे ईश्वरीय कार्यों में क्या आप आचार्यों का सहभाग प्राप्त हो सकेगा ? यह वेदना प्रकट हो रही थी एक वरिष्ठ प्रचारक श्री गाँधी की। हाफलाँग प्रकल्प का श्री गणेश लखनऊ में ही हुआ। हाफलाँग प्रकल्प के कार्यों की विशालता प्रचार-प्रसार के स्तम्भ गाँधी जी थे।

गाँधी जी के आह्वान पर श्री पंकज रंजन सिन्हा हाफलाँग प्रकल्प के विकास के साधक बने। हाफलाँग असम के दक्षिण प्रान्त में नागालैण्ड, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा, मणिपुर आदि से घिरा हुआ १८२ जन-जातियों के इस केन्द्र पर गाँधी जी तथा पंकज रंजन सिन्हा ने एक विद्यालय आरंभ किया। ग्राम बूढ़ा ने यह भूमि उन्हें दी। वहाँ के राज्यपाल इस भूमि का मूल्य देने को तैयार थे। हेराका संगठन की नेता रानी

माँ गाइडिनलियू गाँधी जी के प्रयास की प्रशंसक रहीं।

१९८२ वसंतोत्सव पर सरस्वती शिशु मंदिर गुरुकुल छात्रावास का आरंभ हुआ। नौ जनजातीय के दस बच्चों से गुरुकुल का आरंभ हुआ। गाँधी जी ने 'प्राची' नाम से एक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया। प्राची पत्रिका पूर्वोत्तर की अपनी गाथा है। गाँधी जी ने जनजातीय क्षेत्रों की बोलियों की पुस्तकें नागरी लिपि हिन्दी में प्रकाशित की हैं। इनकी प्रेरणा से राकेश कुमार ने दो प्रेरणादायक फिल्में बनायीं।

भाऊराव देवरस ने एक संदेश में एक बार कहा– ''अनेक वर्षों से श्री कृष्णचंद्र गाँधी जी पूर्वांचल भारत में रहकर उस क्षेत्र में शिशु मंदिर, विद्या मंदिर का मार्गदर्शन कर रहे हैं उनका इस क्षेत्र की सभी समस्याओं का गहन चिंतन है। श्री कृष्णचंद्र गाँधी को आरंभ से दमा या रोग था, जिसमें चावल का भोजन निषिद्ध था। परन्तु जो अन्य सामान्य जन भोजन करते थे, वही वे भी करते थे। अतिथियों को गेहूँ की रोटियों का प्रबंध करने के बाद भी स्वयं चावल लेते थे। कठोर परिश्रम पैदल यात्रा, उपवास आयु की अधिकता से इनका शरीर शिथिल होता गया। जब वे हाफलाँग की यात्रा पर गये तो वहाँ बालकों ने ८१ वे जन्मदिन पर ८१ दीप जलाकर अपनी भाषा में गाँधीजी का मंगलगान किया। मथुरा आकर भोजन भी बंद कर दिया। अंतिम समय में अपनी इच्छा 'प्राची' बताई। मा. ब्रह्मदेव जी शर्मा भाई जी वहाँ थे। २४ नवम्बर ०२ प्रात: ६ बजे चल बसे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक विद्या भारती प. उ. प्र. क्षेत्र के संरक्षक रहे। वे परम सात्विक उदार हृदय अध्यात्म निष्ठ महात्मा थे। किसी से अपनी सेवा कराने के पक्ष में वे नहीं थे।

मृत्यु से पूर्व बिहारी जी का प्रसाद ग्रहण कर दिव्यलोक प्रस्थान किया। अपने उज्ज्वल आचरण से वे प्रेरणास्रोत बने रहे।

– रामपुरभगन, अयोध्या (उ. प्र.)

बढ़ता क्रम 01

– देवांशु वत्स

संकेत:-

1. जिस, किसी को जाने के लिए कहना।
2. जीवन, प्राण, परिचय।
3. राजा जनक की पुत्री।
4. सजीव, जीवधारी।
5. मजेदार, लजीज।
6. जानते या समझते हुए।

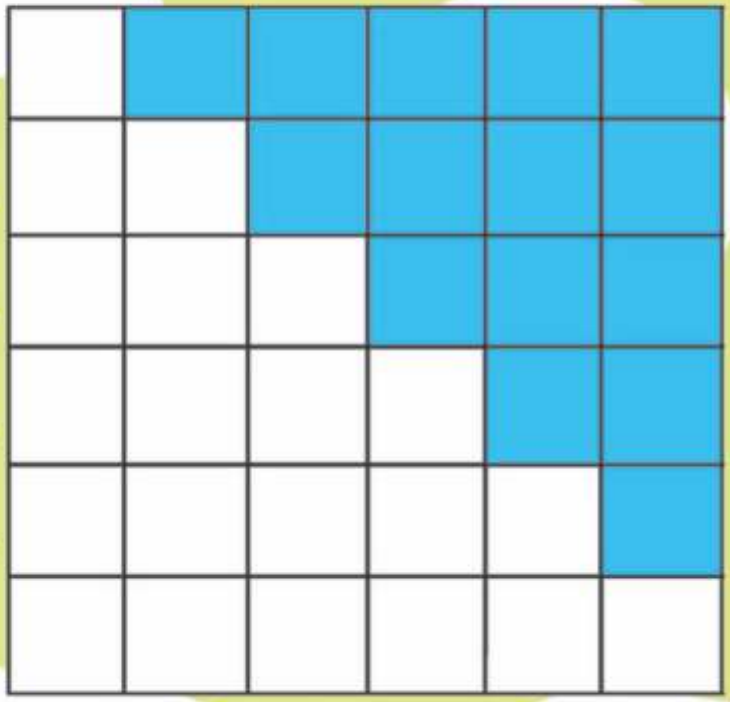

उत्तर: 1. जा, 2. जान, 3. जानकी, 4. जानदार, 5. जायकेदार, 6. जानकार।

कैसे कैसे लोग

चित्रकथा-

शामू और कलुआ धोबी पड़ोसी थे.एक दिन-

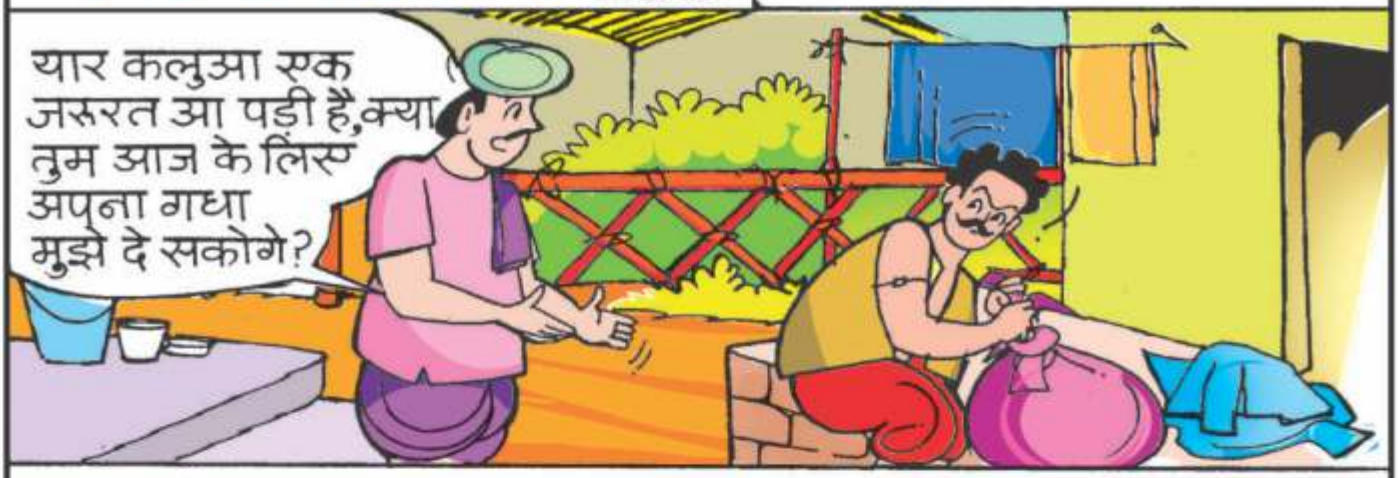

कलुआ ने बहाना बनाया-

लेकिन तभी-

दोस्त किताबें

– इंजी. आशा शर्मा

कोरोना के कारण जब से मोबाईल पर ऑनलाईन कक्षाएँ लगने लगी हैं विशाल के मजे हो गए। न सुबह जल्दी उठकर नहाने का झंझट और ना ही विद्यालय का वेश पहनने का जंजाल। बस बिस्तर में घुसे–घुसे ही मोबाईल ऑन कर लो और अपना ऑडियो–वीडियो बंद करके शिक्षक का पाठ सुनते रहो। इस बीच सुबह की दिनचर्या भी चलती रहती है। कई बार तो वह कक्षा के बीच में झपकी भी ले लेता है।

वर्ष की शुरुआत में जब लॉकडाउन के कारण विद्यालय बंद हो गए थे तब उसे बहुत अटपटा लगा था। कुछ दिन तो सबने मित्रों और शाला की मस्ती के अभाव को बहुत अनुभव किया था। हर शाम बगीचे में खेलने जाने के लिए मन ललकता था लेकिन फिर धीरे–धीरे सबको इस नई व्यवस्था की आदत पड़ती गई। अब तो बस्ते की ओर देखने का भी मन नहीं करता। वह भी एक कोने में पड़ा मुँह बनाता रहता है। खेल भी अब ऑनलाईन खेलने में ही रस आने लगा है।

ऑनलाईन कक्षा लेने के कारण विशाल बहुत आलसी और पूरी तरह से इंटरनेट पर निर्भर हो गया। किसी भी प्रश्न का हल खोजना हो तो बस नेट चलाओ और सर्च कर लो। कितना आसान है सब कुछ।

''काश कि यह सब पहले ही हो गया होता तो बस्ते का भारी बोझ उठाकर शाला की दो मंजिल सीढ़ियाँ नहीं चढ़नी पड़ती। जेब में रखे मोबाईल से ही सारा काम हो जाता। खेल भी, पढ़ाई भी और मित्रों के साथ चैटिंग भी।'' सोचते हुए विशाल का मोबाईल अपना सबसे निकट का साथी लगने लगता। जब देखो तब विशाल मोबाईल को अपने साथ ही रखता। माँ खूब समझाती कि यह तो कुछ दिन का ही साथी है, कोरोना के बाद तो बस्ता लेकर ही शाला जाना पड़ेगा इसलिए किताबों से ही अपनी पढ़ाई करो, लेकिन विशाल कहाँ किसी की सुनता था।

पढ़ाई तो ऑनलाईन हो ही रही थी, आज जब शिक्षक ने कहा कि इस वर्ष वार्षिक परीक्षा भी ऑन लाईन ही होगी तो विशाल प्रसन्नता के मारे उछल पड़ा।

''किसी को क्या ही पता चलेगा। मैं तो इंटरनेट से सारे प्रश्नों के उत्तर खोज लूँगा।'' सोचते हुए विशाल ने जेब में रखे मोबाईल को सहलाया और मन ही मन सारी योजना बना ली।

''माँ बार–बार समझाती कि परीक्षा सिर पर है, कुछ पढ़ ले, लेकिन विशाल को किताबों से अधिक इंटरनेट पर भरोसा था। वह माँ की बात एक कान से सुनकर दूसरे से निकाल देता।

कल से विशाल की वार्षिक परीक्षा प्रारंभ होने वाली है लेकिन उसके चेहरे पर प्रतिवर्ष की भाँति दिखने वाली कोई परेशानी दिखाई नहीं दे रही। रात को भी वह हमेशा की तरह मोबाईल पर गेम खेलकर ही सोया।

सुबह दस बजे से प्रश्न–पत्र प्रारंभ होने वाला था। आज गणित का पेपर था। विशाल उत्तर लिखने के लिए खाली कॉपी और ज्यॉमेट्री का सारा सामान लेकर अपने मोबाईल पर नेट चलाकर बैठ गया। आज उसने अपनी माँ का मोबाईल भी अपने पास रख

लिया ताकि अपना प्रश्नपत्र दुगनी गति से हल कर सके।

ठीक दस बजे विशाल की मेल पर गणित का प्रश्नपत्र अपलोड हो गया। विशाल ने उसे फटाफट डाऊनलोड किया और जवाब लिखने के लिए कॉपी तैयार करने लगा। उसने पहला प्रश्न सर्च में डाला और उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर के बाद स्क्रीन पर ''नो मैच फाउंड'' लिखा आया, तो विशाल चकरा गया। उसने दूसरा फिर तीसरा प्रश्न डाला लेकिन इंटरनेट ने किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

''ऐसा कैसे हो सकता है? पहले तो कभी नहीं हुआ। गूगल पर तो सब कुछ मिल जाता है फिर यह प्रश्न क्यों नहीं मिल रहे? सोचते-सोचते विशाल के हाथ-पाँव ठंडे पड़ने लगे। माथे पर पसीना आ गया।

''शायद गणित होने के कारण अंक नहीं मिल रहे, यदि और कोई विषय होता तो सर्च करने पर मिल ही जाता। अब तो केवल किताबें ही इस मुसीबत से बचा सकती हैं।'' वह तुरन्त दौड़कर अपनी गणित की किताब उठाकर लाया और प्रश्न खोजने लगा। उसे प्रश्नपत्र में दिए गए प्रश्नों से मिलते-जुलते तो कई प्रश्न मिले किन्तु एक जैसा प्रश्न एक भी नहीं मिला। अपने आप से प्रश्न हल करने का तो उसे अभ्यास ही नहीं था।

विशाल रोने लगा। माँ दौड़कर आई और रोने का कारण पूछा तो विशाल ने सब सच बता दिया। माँ ने उसके आँसू पोंछे और इस शर्त पर कुछ प्रश्न हल करने में उसकी मदद की कि अगले प्रश्नपत्र की तैयारी वह अच्छी तरह से किताब पढ़कर ही करेगा। विशाल ने हामी भर ली।

अभी विशाल कुछ ही सवाल हल कर पाया था कि उत्तर पुस्तिका अपलोड करके का समय हो गया। विशाल ने अपनी उत्तर पुस्तिक अपलोड की और मोबाईल बंद करके चुपचाप एक कोने में बैठ गया।

''क्या सोच रहे हो विशाल? जो हो गया उसे एक सबक समझो और भोजन करके अपने अगले प्रश्नपत्र की तैयारी करो।'' माँ ने उसे प्यार से समझाया।

''जी माँ! अगले प्रश्नपत्र में मैं आज वाली गलती नहीं दुहराऊँगा। विशाल ने उदास होकर कहा और उठकर अपने कमरे में जाने लगा।

''अरे कहाँ जा रहे हो? भोजन तो कर लो।'' माँ ने उसे टोका तो विशाल जरा-सा मुस्कुराया और बोला- ''अपने मित्रों को खाने पर बुलाने।''

हँसती हुई माँ रसोई में विशाल के लिए चपाती सेकने लगी।

- बीकानेर (राजस्थान)

बताओ तो जानें

- चाँद मोहम्मद घोसी
नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी (राज.)

विद्यार्थी विज्ञान मंथन 2021-22

डिजिटल उपकरणों का उपयोग कर भावी भारत के लिए सबसे बड़ी
राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा

विज्ञान में विशेष रुचि रखने वाले पाठ्यकर्मियों के लिए

भारत के प्रथम वैज्ञानिक महाप्रयोग में प्रतिभाग करने का अवसर

REGISTER NOW

ऑनलाइन पंजीकरण :

31 अक्तूबर 2021 से पूर्व

http://www.vvm.org.in पर

एन सी ई आर टी NCERT

वि P V प्र

vibha

VIBHAIndia.org vibha_india vibha_india VidyarthiVigyanManthan

विज्ञानभारती, विज्ञानप्रसार एवं एनसीईआरटी द्वारा
भावी भारत के लिए विज्ञान प्रतिभा खोज का अभिनव आयोजन

विद्यार्थी विज्ञान मंथन

विद्यार्थी विज्ञान मंथन VVM भावी भारत के लिए एक विज्ञान प्रतिभा खोज परीक्षा है जिसका आयोजन विज्ञान भारती द्वारा विज्ञान प्रसार और एनसीईआरटी के साथ मिलकर राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिवर्ष किया जाता है।

इसका मुख्य उद्देश्य विज्ञान से जुड़े विषयों में रुचि रखने वाले छठीं से लेकर ग्यारहवीं कक्षा तक के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की पहचान करना तथा उन्हें शिक्षित करना है। साथ ही विद्यार्थियों में सैद्धांतिक विज्ञान के प्रति रुचि उत्पन्न करना, उन्हें विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारत के अद्वितीय योगदानों से परिचित करवाना, कार्यशालाओं के माध्यम से विज्ञान का व्यावहारिक प्रशिक्षण देना एवं विजेता विद्यार्थियों के लिए विभिन्न अनुसंधान एवं विकास संस्थाओं में शैक्षणिक भ्रमणों का आयोजन करना भी इस मंथन का मुख्य हेतु है।

विद्यार्थी विज्ञान मंथन परीक्षा का आयोजन तीन स्तरों पर किया जाएगा। विद्यार्थी अपनी सुविधा के अनुसार प्रथम चरण की परीक्षा ३० नवम्बर २०२१ या फिर ०५ दिसम्बर २०२१ को दे सकते हैं। नब्बे मिनट की इस परीक्षा में १०० बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें से ५० प्रश्न विज्ञान व गणित पर, २० प्रश्न विज्ञान के क्षेत्र में भारत के योगदान पर, २० प्रश्न भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष और विज्ञान पर (इस वर्ष आचार्य प्रफुल्ल चंद्र राय की जीवन गाथा पर विशेष केन्द्रित होगा) और १० प्रश्न तार्किक शक्ति पर होंगे।

यह परीक्षा हिन्दी और अंग्रेजी समेत तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम, मराठी, गुजराती, पंजाबी, बंगाली, ओड़िया और आसामी ऐसे कुल १२ भाषाओं में आयोजित होगी। विद्यार्थी इंटरनेट से जुड़े डिजिटल उपकरणों का–जैसे डेस्कटॉप, लेपटॉप, टेबलेट, या ऐंड्रॉइड स्मार्टफोन का उपयोग कर इस परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं। प्रथमचरण से उत्तीर्ण होकर विद्यार्थी द्वितीय चरण में राज्यस्तरीय परीक्षा दे पाएंगें एवं द्वितीय चरण से उत्तीर्ण होकर तृतीय चरण में राष्ट्रस्तरीय परीक्षा के लिए पात्रता प्राप्त कर सकेंगे। राज्य स्तर एवं राष्ट्र स्तर पर चयनित विद्यार्थियों के लिए दो दिवसीय साइंस कैंप का भी आयोजन होगा।

विद्यालय स्तर पर सफल विद्यार्थी मेरिट प्रमाण–पत्र जीत सकेंगे तथा राज्य स्तर पर पहले तीन विजेताओं को पुरस्कार स्वरूप पाँच, तीन और दो हजार रुपयों की पुरस्कार राशि प्रदान की जाएगी। राष्ट्रीय स्तर पर यही पुरस्कार राशि क्रमशः पच्चीस, पंद्रह और दस हजार रुपयों की होगी। विजेताओं के साथ राष्ट्रीय स्तर पर चयनित सभी विद्यार्थी एक वर्ष की **'भास्कर छात्रवृत्ति'** के हकदार होंगे। विज्ञान भारती द्वारा संचालित **'सृजन कार्यक्रम'** के अंतर्गत उन्हें डीआरडीओ, इसरो जैसी विभिन्न अनुसंधान एवं विकास संस्थाओं में एक से तीन सप्ताह का प्रशिक्षण मिलेगा।

शिक्षा किसी भी समाज के विकास और प्रगति का आधार होती है।यह मानव विकास की आधार शिला है। बच्चों के जीवन में शिक्षा के प्रारंभिक वर्ष बहुत महत्व रखते हैं क्योंकि यह प्रभावशाली आयु जीवन को बदलने की ताकत रखती है। विज्ञान भारती केवल बच्चों तक अच्छी शिक्षा पहुँचाना ही नहीं, बल्कि आगे की सफलता और प्रगति भी सुनिश्चित करना चाहती है। भावी भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए विज्ञान भारती सतत प्रयत्नशील है।

छः अंगुल मुस्कान

☺ **दिनेश**– लाईब्रेरी में एक किताब पढ़ने के बाद बोला– कितनी बोरियत भरी है। इसमें सारे कैरेक्टर तो हैं स्टोरी नहीं है।

लाईब्रेरियन– अरे भाई! यह तो टेलीफोन डायरेक्ट्री है।

☺ **पिता**– लंका को सोने की क्यों कहते हैं?

बेटा– इसलिए कि वहाँ कुम्भकर्ण जैसे सोने वाले लोग रहते थे।

☺ **सब्जीवाला**– सब्जी पर पानी छिड़क रहा था, काफी देर हो गई।

ग्राहक– भाई साहब! अगर भिण्डी और करेले की प्यास बुझ गई हो तो मुझे एक किलो प्याज दे दो।

☺ **शिक्षक**– यदि सूरज निकलना बंद हो जाए तो क्या होगा?

राजू– बिजली की चोरी और अधिक बढ़ जाएगी।

☺ एक सिपाही ने एक चोर को पकड़ा। सिपाही के पास मोटी रस्सी नहीं थी।

चोर– लगता है आप मोटी रस्सी ढूंढ़ रहे हैं मेरी कमर में बाँधने हेतु। आप यहीं रुकिए मैं लाता हूँ।

सिपाही– मुझे बेवकूफ समझता है, तू यहीं रुक मैं, रस्सी लेकर आता हूँ।

'देवपुत्र' का जून–जुलाई २०२१ का अंक प्राप्त कर अति प्रसन्नता हुई। कोरोना काल में जबकि पाठशालाएँ बंद हैं और कई पत्रिकाओं का प्रकाशन बंद हो गया है, ऐसे में 'देवपुत्र' बाल–शिक्षण का कार्य निरंतर कर रहा है। यह बाल बासिक बालकों में आज जिन संस्कारों का बीजारोपण कर रहा है, वे आने वाले समय में सदाचार के वटवृक्ष बनकर समाज को शीतल छाया प्रदान करेंगे। 'देवपुत्र' बालकों को वर्तमान समय की समस्याओं से भी सहज भाव से परिचित करा देता है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति यह न केवल बालकों को सचेत कर रहा है वरन् उनको वैचारिक प्रदूषण से भी बचा रहा है। 'देवपुत्र' में प्रकाशित सभी विधाओं की रचनाएँ, बालकों के स्वस्थ मानसिक विकास में सहायक हैं।

– सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा', कोटा (राज.)

'देवपुत्र' अगस्त २१ का अंक स्वतंत्रता व रक्षा बंध पर्व को समेटे बहुत ही सुन्दर व उद्देश्यपूर्ण बन पड़ा है। कवर पृष्ठ विशेष आकर्षण के अधीन है तो भीतर की सामग्री भी तद्नुरूप चुनिंदा व गुणवत्तापूर्ण है। नई पीढ़ी को सार्थक व पठनीय सामग्री उपलब्ध कराने का आपका यह प्रयास अनुकरणीय है।

– अरविंद कुमार साहू, ऊँचाहार (उ. प्र.)

'देवपुत्र' के इस (अगस्त २०२१) अंक का आवरण अंदर की सामग्री को प्रतिबिंबित कर रहा है। देशभक्ति और राखी पर आधारित रचना का बाहुल्य अच्छा लगा। रचनाओं का चयन व साज–सज्जा भी अनुकूल लगी।

– प्रकाश तातेड़,
(बच्चों का देश) सहसम्पादक
राजसमंद (राज.)

सरल विज्ञान

प्रस्तुति- **संकेत**

आदतें तब बनती हैं जब हम कोई काम या हरकत बार-बार करते हैं तब वे हरकतें हमसे चेतना या जाग्रत प्रयास के बिना भी होने लगती हैं.

ऐसी हरकतें स्वचालित ढंग से होने लगती हैं...

आदतें हमारा बहुत समय बचा सकती हैं क्योंकि वैसा करते वक्त हमें सोचने में वक्त नहीं लगाना पड़ता...

यह साबित करें ?...

एक घड़ी में समय देखो फिर एक कागज पर सीधे-सीधे अपने नाम की स्पेलिंग पच्चीस बार लगातार लिखो..., कितना समय लगा ?...

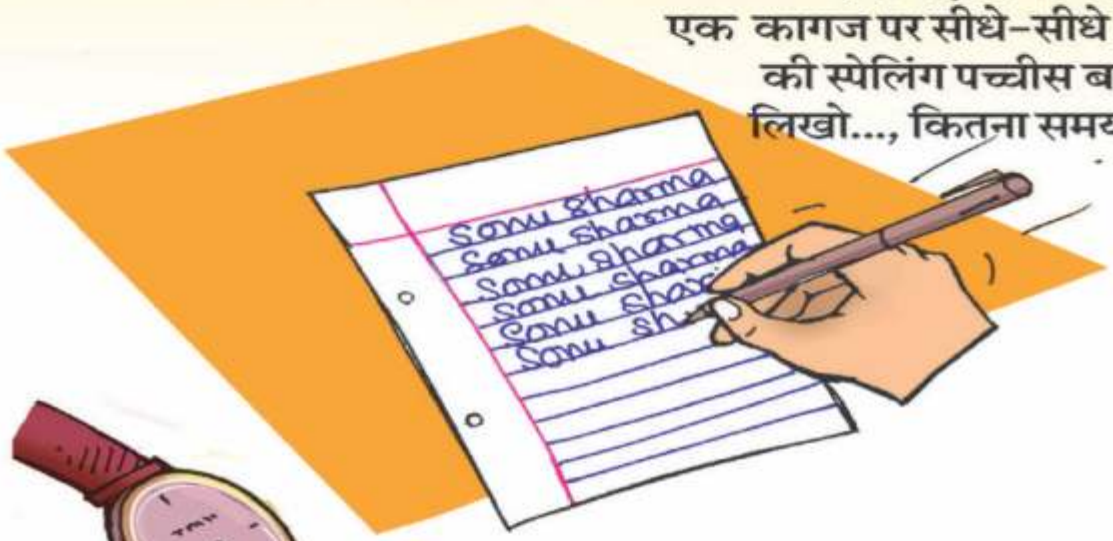

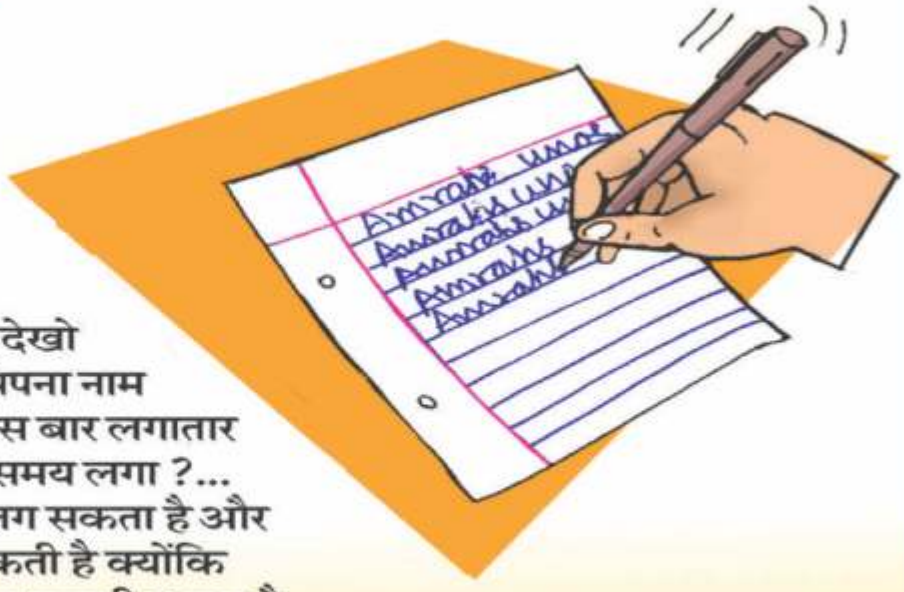

अब फिर घड़ी में समय देखो एक दूसरे कागज पर अपना नाम की उल्टी स्पेलिंग पच्चीस बार लगातार लिखो..., अब कितना समय लगा ?... समय बहुत ज्यादा भी लग सकता है और स्पेलिंग गलत भी हो सकती है क्योंकि अपना नाम सीधे लिखना तुम्हारी आदत है, पर उसकी उल्टी स्पेलिंग लिखना नहीं.

कहानियों का भण्डार

– डॉ. राजेन्द्र पंजियार

सुषेण लम्बी छुट्टियों में माँ के साथ नानी के पास चला जाया करता था। ऐसे अवसर की प्रतीक्षा वह बहुत पहले से किया करता और छुट्टी होने की तिथि प्रतिदिन–सुबह उठकर एक दिन घटाते हुए प्रसन्न होता। इस प्रसन्नता भरी प्रतीक्षा का एक विशेष कारण यह था कि नानी उसे प्रतिदिन रात में एक कहानी सुनाया करती थी।

कहानी सुनते हुए यदि नींद आ जाती, तो दूसरे दिन कहानी पूरी होती। कई दिन नई–नई कहानियाँ सुनने के बाद सुषेण पूछ बैठता कि इतनी कहानियाँ उसने कहाँ से सुन रखी है और कैसे सुनी कि कभी भूलती ही नहीं?

नानी कहती कि उनके पिताजी एक बड़े नामी कहानीकार थे, जिन्होंने बच्चों के लिए अनेक कहानियाँ लिखीं और पत्रिकाओं तथा समाचार पत्रों में वे प्रकाशित हुईं। कहानियाँ छपने से पहले वे उन्हें सुनाना नहीं भूलते थे।

यही कारण था कि बचपन से सुनी कहानियाँ नानी को अब तक याद है। इसके बाद तो वे स्वयं भी कुछ कहानियाँ लिखकर भेजतीं और पत्र–पत्रिकाओं में छप जातीं।

सुषेण एक गर्मी की छुट्टी में जब माँ के साथ नानी के घर गया, तो उसकी प्रतीक्षा करती नानी ने देखते ही गले से लगा लिया और कहा कि छुट्टी समाप्त होने पर जब वह लौट जाता है तो कई दिनों तक मन में उदासी छायी रहती है। उसकी पढ़ाई का विचार रखकर आगे वह रोकना भी ठीक नहीं समझती।

विद्यालय खुल जाने पर प्रतिदिन नियमित शाला जाना बहुत आवश्यक है। ऐसा नहीं करने से वह पढ़ाई में पिछड़ जाएगा और परीक्षा में अच्छा नहीं कर पाएगा। यह बातें हो ही रही थीं कि सुषेण को अचानक स्मरण हो आया कि उसके विद्यालय के साथी उसका नाम लेकर हँसी करते हैं और उसका मजाक उड़ाते हैं कि सुषेण नाम भी कोई नाम है? आज तक पूरे विद्यालय में और बाहर किसी लड़के का ऐसा नाम सुना नहीं। किसने ऐसा नाम दे दिया कि सुनकर विचित्र लगे?

इस नाम का अर्थ माँ से पूछा तो बोली कि नानी का दिया यह नाम है। उन्हीं से पूछ लेना, क्या सोचकर ऐसा नाम दिया कि जिसका कोई अर्थ ही नहीं जानता?

सुषेण की बातें सुनकर नानी मुस्कुराई और बोली कि बेटा, यदि

तुम्हारी माँ तुलसीदास की **'रामचरित मानस'** रचना पूरी पढ़ी होती तो माँ को तुम्हारे नाम के बारे में बताने में कोई उलझन नहीं होती।

इसी बीच सुषेण की माँ दूध का ग्लास उसके लिए लेकर आ गई। माँ को देखकर वह तुलसीदास की रचना के बारे में पूछता, पर उसकी नजर ज्यों ही ग्लास पर पड़ी कि नाक-भौं सिकोड़कर आँखें मूँद ली। नानी एक बार फिर मुस्कुराई और बोली- देखो बेटा! दूध पी-पीकर ही मेरा शरीर आजतक स्वस्थ रहा है और याददाश्त ऐसी बनी है। यदि तुम नहीं पियोगे, तो तुम्हारे नाम के बारे में भी अब नहीं बताऊँगी।

सुषेण ने दूध पीना शुरू किया तो नानी भी आगे की बातें कहने लगी। बोली ''उन्होंने सुषेण को यह नाम खूब सोच-विचार कर दिया है। राम-रावण-युद्ध में जब भगवान राम के छोटे भाई लक्ष्मण को रावण के पुत्र मेघनाद का शक्ति बाण लगा तो वे गिरकर बिलकुल अचेत हो गए। उन्हें चेतना में लाने का उपाय सेनापति जाम्बवंत ने बताया कि लंका में सुषेण नामक नामी वैद्य रहते हैं। वहीं इन्हें अपने अचूक उपचार से चैतन्य कर सकते हैं।

हनुमानजी को सुषेण वैद्य को लाने का काम सौंपा गया तो भगवान श्रीराम की आज्ञा पाकर सुषेण को घर समेत वे उठा ले आए। जब तक लक्ष्मण की चेतना नहीं लौटी थी, भगवान उनके लिए रोते रहे।'' इस पर सुषेण बोल उठा ''नानी! क्या भगवान भी हम लोगों की तरह रोते हैं?''

''देखो बेटा! भगवान ने अवतार लेकर साधारण मनुष्य की भाँति लीलाएँ की थीं।'' इस पर सुषेण पूछ बैठा ''यह लीला क्या होती है?''

नानी बोली- ''जो सच नहीं होता, पर कुछ समय के लिए सच जैसा दिखाई देता है, वह लीला कही जाती है। भगवान राम का अपने भाई के लिए रोना भाई के प्रति प्रेम का परिचय भी है।''

सुषेण का ध्यान अब फिर अपने नाम के वैद्य की ओर लौटा। तभी उसने नानी से पूछा ''क्या तुम मुझे वैसा ही वैद्य बनाना चाहती हो? नानी बोली- हमारे देश में पुराने जमाने में जंगली और पहाड़ी पौधों से बड़े-से बड़े रोगों का उपचार होता था। यह देश के महान ऋषि-महात्माओं की खोज थी। उन पौधों से तैयार दवा से उपचार आयुर्वेद कहा जाता था। यह दुनिया को भारत की बहुत बड़ी देन है।

आज भी वैद्य लोग अपने उपचार से रोग को जड़ से समाप्त कर देते हैं। इसी कारण अच्छे वैद्य की समाज में बड़ी प्रतिष्ठा होती है।''

नानी की बातें सुनकर सुषेण खुशी से फूल उठा। उसने मन ही मन सोच लिया कि वह पढ़कर वैद्य ही बनेगा और उपचार कर रोगियों को स्वस्थ करेगा। तब लोग कितने प्रसन्न होंगे। पर नानी ने सुषेण वैद्य की जो कहानी बताई, वह प्रतिदिन सुनाने वाली कहानी तो नहीं हुई?

इस पर नानी ने समझाया कि सुषेण नाम देने का कारण बताने के लिए ही रामायण की उस घटना की बात बतानी पड़ी। यह बहुत आवश्यक था कि अपनों के विषय में वह जाने।

अब मित्रों को अपने सुषेण नाम के पीछे की घटना बताकर मजाक उड़ाने से उसे छुटकारा मिल जाएगा। सुषेण को अपने नाम का रहस्य जानकर बहुत आनंद हुआ। उसने तभी विचार कर लिया था कि वह भी सुषेण वैद्य की भाँति ही बड़े से बड़े रोगों का उपचार कर लोगों को आनंद पहुँचायेगा।

आज उसे एक बार फिर अनुभव हुआ कि उसकी नानी सचमुच कहानियों का भण्डार है जो कभी खाली होता ही नहीं। वह इस प्रसन्नता में नानी से लिपट गया और बोला कि नानी तुम मेरी माँ के साथ मेरे ही घर में रहा करती, तो कितना अच्छा होता!

- भागलपुर (बिहार)

डाक टिकिट की कहानी

– डॉ. जमनालाल बायती

इतिहास साक्षी है कि पूर्व के राजा एक–दूसरे को संदेश देने के लिए दूत की सहायता लेते थे या यूँ कह सकते हैं कि वे दूत के साथ संदेश भेजते थे। साहित्यकार विशेषरूप से कालिदास ने अपनी पत्नी को संदेश देने के लिए मेघ को अपना दूत बनाया था और यह संदेश मेघदूत पुस्तकाकार में उपलब्ध है। साधारणजन अपने पत्रों का आदान–प्रदान पक्षियों के माध्यम से करते थे अर्थात् कबूतर इस कार्य को पूर्णता देते थे।

बात उस समय की है जब डाक टिकिट का विश्व में आविष्कार नहीं हुआ था। उस समय पत्र तो भेजे जाते थे परन्तु व्यय पत्र भेजने वाले को या पत्र पाने वाले को देना पड़ता था। यह डाक व्यय पत्र द्वारा तय की जाने वाली दूरी पर निर्भर होता था। तब पत्र को विभिन्न प्रकार की मोहरों से चित्रित किया जाता था कि पत्र का डाक व्यय दिया गया है या नहीं। उस समय लिफाफे का जन्म नहीं हुआ था इसलिए पत्र को तरह–तरह से मोड़कर चिपका देते थे। भेजने वाले के नाम के साथ पाने वाले का नाम पता भी उस पर लिख दिया जाता था परन्तु यह सेवा बेकार सिद्ध हुई।

वर्ष १८३५ में सर रौलेण्ड हिल (दि फादर ऑफ स्टैम्प) ने इंग्लैंड में करों की समस्या का अध्ययन किया तो उन्होंने पाया कि अधिक डाक–व्यय होने के कारण डाक द्वारा मिलने वाला राजस्व बहुत कम है। तब वर्ष १८३७ में उन्होंने एक छोटी–सी पुस्तक (पैम्फलेट) 'पोस्ट ऑफिस रिफार्म' यानि कि 'डाक घर का विकास, आवश्यकता और कार्यक्रम' प्रकाशित की। इसमें उन्होंने डाक के व्यय के कम से कम मूल्य, एक समान मूल्य, पत्र द्वारा तय की हुई दूरी तथा पूर्ण शुल्क अदायगी की आवश्यकता एवं इत्यादि जानकारी देकर सुझाव दिया था।

यही नहीं उन्होंने एक सुझाव और दिया था कि रैपर या लिफाफा, जिस पर पूर्व शुल्क अदायगी की मुद्रा छपी हो, जारी होना चाहिये। इसके अतिरिक्त जो व्यक्ति अपना निजी लिफाफा प्रयोग करना चाहे वह छोटे–छोटे चिपकने वाले लेबल खरीदकर उस पर चिपकायें। एक समान डाक व्यय के सिद्धान्त को सामने रखते हुए एक शिलिंग के लिये पत्र का अधिकतम भारत एक औंस रखा गया तथा दूरी की गणना को हटा दिया गया क्योंकि सभी पत्र एक साथ एक शहर से दूसरे शहर ले जाये जाते हैं।

यह सुझाव बहुत अच्छे थे इसलिये इंग्लैण्ड की संसद ने इन्हें १० जनवरी १९४० को मान लिया तथा इसके अतिरिक्त और भी सुझाव सामने आये।

१) केवल इंग्लैण्ड में किसी पत्र की स्थानीय यात्रा पर डाक–शुल्क एक पैनी लिया जाये जिसका अधिकतम भार आधा औंस हो।

२) डाक–शुल्क पत्र भेजने वाला ही देगा। पाने वाला नहीं।

३) न्यूनतम डाक–शुल्क के लिये एक पैनी का लेबल निकाला जाये और उसे पत्र पर चिपकाया जाये।

इसके बाद टिकट पर सुझावों के लिये एक प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसका विषय था कि **'दि मैनर इन व्हिच दि स्टैम्प में बेस्ट बी ब्रीट इन टू यूज'** (वह तरीका जिसके द्वारा टिकट को सबसे अच्छी तरह प्रयोग किया जाये) इस प्रकार प्राप्त सुझावों में निम्न सुझाव सही व उपयुक्त समझे गये–

१) टिकट को प्रयोग करना सुविधाजनक है।

२) इससे जालसाजी नहीं हो सकती है।

३) डाकघर द्वारा इसका परीक्षण करना सरल है।

४) इसकी लागत एवं वितरण व्यवस्था सस्ती है।

इस प्रकार २६०० निबंध प्राप्त हुए तथा चार पुरस्कार एक-एक पौण्ड (एक हजार आठ सौ रुपये) के वितरित किये गये। तब इस प्रकार ६ मई १८४० को विश्व का प्रथम डाक-टिकट **'पैनी ब्लेक'** (काले रंग का जिसका मूल्य एक पैनी था) जारी हुआ तथा भारती पत्रों मे लिये नीले रंग का दो पैनी का टिकट जारी हुआ। बहुत शीघ्र ही इन टिकटों का रंग लाल कर दिया गया। फिर पोस्टकार्ड का चलन शुरू हुआ।

डाक-व्यय की पूर्व अदायगी प्रणाली से ब्रिटिश सरकार को बहुत लाभ हुआ। यह देखकर अन्य देशों ने अपने यहाँ भी यह प्रयोग किया। ब्राजील विश्व का दूसरा देश है जिसने १८६३ में टिकट जारी किया। भारत में डाक-टिकट वर्ष १८४२ में जारी हुआ। उस समय सिन्धु प्रांत के कमिश्नर सर वारटेफेरी ने तीन-तरह के डाक-लेबल टिकट जारी किये जिनका नाम सिंध डाक-टिकट पड़ गया। ये लेबल सिंध प्रांत में ही पत्रों को भेजने के लिये थे। इसके बाद वर्ष १८५४ में सम्पूर्ण भारत में डाक टिकटों का चलन शुरू हुआ। भारत विभाजन के कारण सिंध प्रांत पाकिस्तान में चला गया अत: भारत में टिकट का जन्म वर्ष १९५४ में माना जाता है। भारत में सर्वप्रथम आधा आना का चमकीले लाल रंग का टिकट जारी हुआ। जिस पर महारानी विक्टोरिया के सिर का चित्र अंकित था। इसके कुछ समय पश्चात दो आना, चार आना कीमत के विभिन्न रंगों के टिकट जारी किए गए इन्हें लिथोग्राफ स्टैम्प कहा जाता था। वर्ष १९२६ तक लंदन की एक प्रसिद्ध फर्म थामस देलारू ने भारत के टिकट छापे। इसके पश्चात भारत में नासिक (महाराष्ट्र) में प्रतिभूत मुद्रणालय की स्थापना हुई और तब से टिकट वहीं छापे जाते हैं।

- भीलवाड़ा (राजस्थान)

डाक टिकिटों पर राम कथा

चींटी बोली चींटा बोला

– कृष्ण 'शलभ'

चींटी बोली चींटे से यों–
'क्यों करते हल्ला–गुल्ला।
पड़े–पड़े सोते रहते हो
चलो खाएँगे रसगुल्ला।
अभी देख करके आई हूँ
मैं मिम्मां हलवाई के।
हमें कौन से पैसे देने
होंगे अरे मिठाई के।
चींटा बोला– 'अभी जरा
सोने दे, फिर उठ जाऊँगा।
जब तक जा कर तू ही ले आ
मैं तो उठ कर खाऊँगा'।

– सहारनपुर (उ. प्र.)

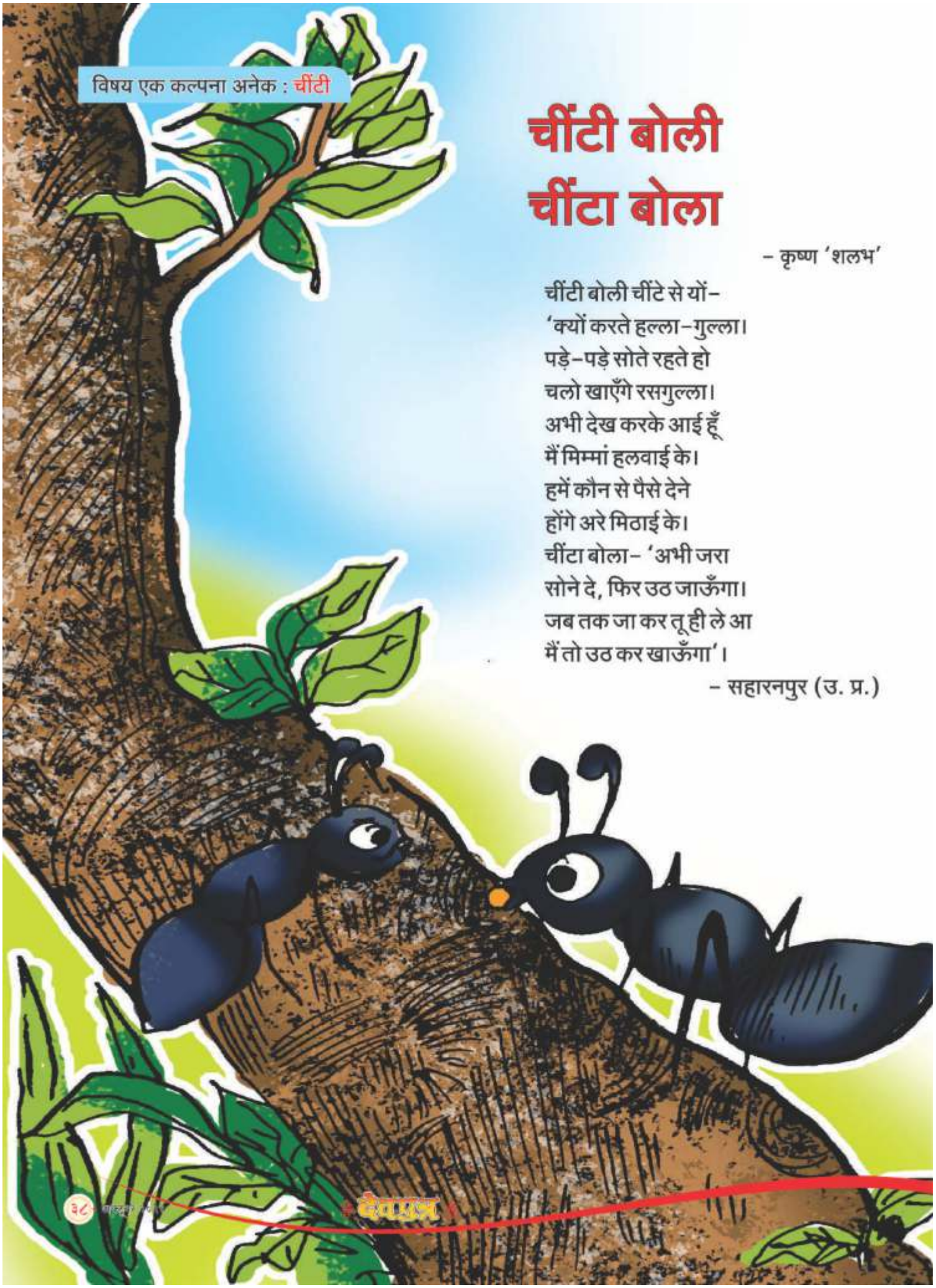

चींटियाँ

– मदन देवड़ा

मिल–जुलकर रहो सदा
कहती हैं चींटियाँ।
करती हैं आपस में
बहुत–बहुत प्यार
इनसे तो हाथी भी
मान गए हार।
'श्रम' से मत घबराओ
कहती हैं चींटियाँ।

चलती हैं हरदम ये
नियम से कतार में
है सच्ची एकता
इनके संसार में।
कितने अनुशासन से
रहती हैं चींटियाँ।
– तराना, उज्जैन (म. प्र.)

चींटी और चूहा

– शिव कुमार गोयल

चींटी ने थोड़ा–थोड़ा कर,
अपना राशन जोड़ा।
उस राशन को चुरा ले गया,
चूहा एक निगोड़ा।।
चींटी थाने में जा पहुँची,
और रपट लिखवाई।
इंस्पेक्टर बिलाव ने की–
चूहे की खूब धुनाई।।
तब से चूहा डरा–डरा है,
चींटी से घबराता।
चींटी जब मिल जाती है तब–
उससे आँख चुराता।।
– पिलखुआ (उ. प्र.)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'चींटी' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

.....
.....
.....
.....
.....
.....

बुढ़िया की गुड़िया

– समीर गांगुली

ना जी, ये बुढ़िया दादी की गुड़िया नहीं थी। न तो बुढ़िया दादी को यह गुड़िया पसंद थी और न ही गुड़िया रानी को यह बुढ़िया। किन्तु दोनों ही इस सच्चाई से अनजान थे। वास्तव में यह गुड़िया थी बुढ़िया दादी की पोती पायल की। जो अब पंद्रह वर्ष की हो गई थी। उसके पाँचवें जन्मदिन पर उसे विद्यालय से कविता पाठ के पुरस्कार में मिली थी यह गुड़िया। यानी गुड़िया की आयु भी अब दस वर्ष की हो गई थी। यह एक मोटी मुटल्ली गुड़िया थी जो पेट दबाने पर पैं–पैं करती थी और पायल को बहुत पसंद थी। किन्तु अब दस वर्षों में उसके रेशमी बालों में गाँठें पड़ गई थीं। उसके फ्रॉक को चूहे ने थोड़ा कुतर दिया था। पैर का एक जूता भी गायब हो गया था। नाक थोड़ी सी घिस गई थी। गुलाबी रंग भी फीका पड़ गया था। और दबाने पर निकलने वाली आवाज भी बंद हो गई थी। पाँच वर्ष से पायल और गुड़िया ने एक–दूसरे को नहीं देखा था। क्योंकि पायल अपने माता–पिता के साथ अमेरिका चली गई थी। दादी और घर के सामान के साथ यह गुड़िया भी यहीं रह गई थी। दादी को अपने साथ अमेरिका ले जाने की पायल ने सबसे बड़ी जिद की थी, किन्तु दादी किसी भी तरह उनके साथ जाने को तैयार नहीं हुई। मजबूरन पिताजी ने एक पुरानी कामवाली बाई को पूरे दिन के लिए दादी की देखभाल करने के लिए रख लिया।

बुढ़िया दादी कान से कम सुनती है, इसलिए अमेरिका से पायल के पिताजी फोन भी करते हैं तो बुढ़िया दादी के अधिक बात कामवाली बाई से होती है। वैसे बुढ़िया दादी जिद्दी भी कम नहीं। सत्तर की हो गई तो क्या मुँह में बत्तीस दाँत हैं और गोल गप्पे से लेकर रेवड़ी–गजक सब जमकर खाती है। मगर.... इस बुढ़िया दादी को पायल की यह गुड़िया बिल्कुल पसंद नहीं है, क्योंकि वह कहती है यह गुड़िया पाजी है।

हाँ जी! बुढ़िया कहती है यह गुड़िया उन्हें घूरती है, कभी–कभी आँखें मटकाती है और मुँह भी बिचकाती है। पता नहीं ये दादी का वहम है या सच! क्योंकि गुड़िया ने आज तक इस आरोप का उत्तर नहीं दिया। गुड़िया से दादी को और भी शिकायतें हैं, जैसे कि गुड़िया रात को खर्राटे लेती है।

कभी–कभी अँधेरे में आवाजें निकाल कर उन्हें डराने का प्रयत्न करती है। उनकी नींद की दवा चुराकर खाती है। उस दिन बुढ़िया दादी ने कामवाली बाई से गुड़िया की एक और शिकायत की। वे बोली– ''आजकल यह गंदी गुड़िया इधर–उधर घूमती रहती है। कभी मेज पर मिलती है तो कभी रसोईघर में, और कभी–कभी थूकती भी है।''

बाई ने भी बुढ़िया दादी की हाँ से हाँ मिला दिया। उसे भी गुड़िया खास पसंद नहीं, क्योंकि उसने एक बार गुड़िया को ठोकर मारी थी और गुड़िया के नुकीले कान या आठ से उसका पैर छिल गया था। लेकिन बुढ़िया का कहना था कि गुड़िया ने उसे दाँत काटा है।

फिर एक दिन तो अति हो गई। गुड़िया भोजन की मेज पर थी। राधाबाई दादी के लिए दाल रोटी बनाकर

रख गई थी। पूजा–पाठ कर बुढ़िया जब खाने बैठी तो दाल में डुबाकर रोटी का पहला कौर खाते ही 'थू–थू' कर उठी।'' इतना नमक??''

फिर बुढ़िया ने साफ देखा कि गुड़िया हँस रही थी। अवश्य उसी ने नमक मिलाया था। दादी की सहनशीलता का बांध टूट गया। उसने तुरंत उसी समय अमेरिका फोन लगाया, पायल को, पाँच वर्ष में पहली बार। अमेरिका में उस समय आधी रात का समय था। पायल चौंक गई, 'हलो' बोला ही था कि उधर से दादी फट पड़ी। दादी एक साँस में बोल गई, ''तेरी गुड़िया ने मेरा जीना मुश्किल कर रखा है। मैं तेरी गुड़िया को कल कचरे के डिब्बे में डाल दूँगी। या आग में डाल दूँगी.... या कैंची से काट दूँगी। या पता नहीं क्या करूँगी। किन्तु अब उसे इस घर में नहीं रहने दूँगी।''

दादी की आवाज सुनकर सन्न रह गई पायल। हँसते–हँसते रहने वाली दादी कैसे बोल रही थी। ऐसी तो न थी दादी। उसे कितना प्यार करती थी। पायल के मुँह से इतना ही निकला, ''दादी तुम कैसी हो?'' दादी अब तो तोप बहादुर की तरह बोली– ''गोली मार दादी को। बाकी मुझे इतना कहना है तेरी गुड़िया अब इस घर में नहीं रहेगी। मैं.... उसे....।''

''तुम उसे कुछ नहीं करोगी। समझी बुढ़िया दादी!'' पायल में जाने कहाँ से हिम्मत आ गई, वह भी दादी की तरह चिल्लाकर बोली– ''वह गुड़िया मुझे पुरस्कार में मिली थी। दादी भी चिल्लाई, ''तेरी है तो ले जा। मेरे घर में वो मेरे साथ नहीं रह सकती।''

पायल– ''किन्तु क्यों?'' दादी– ''क्योंकि तेरी गुड़िया बदमाश है।'' पायल– ''ओह हो! गुड़िया बदमाश है। दादी! यह मेरे पिताजी का घर है।''

दादी– ''तो आकर मुझे निकाल दे अपने पिताजी के घर से। याद रख वह मेरा भी बेटा है।''

पायल– ''ठीक है दादी तुम्हारा उपचार करती हूँ।'' और फिर पायल ने क्रोध में आकर फोन पटक दिया। दादी–पोती के इस मोबाईल युद्ध के ठीक १० दिन बाद सुबह–सुबह बुढ़िया दादी के घर की कॉल बेल बजी। दरवाजा खोला तो देखा १५ वर्ष की एक सुन्दर लड़की दरवाजे पर खड़ी है। दादी ने पूछा– ''कौन?''

उत्तर में प्रश्न आया– ''मेरी गुड़िया कहाँ है?''

दादी– ''गुड़ियाऽऽ?? तुम... तू... क्या पायल?'' पायल– ''हाँ, मैं पायल, सामने से हटो, घर में आने दो। बुढ़िया हो गई, फिर भी दादागिरी करती है?'' दादी– ''हूँऽऽऽ! तो तू गुड़िया लेने आयी है, अमेरिका से।'' पायल– ''हाँ, मैं बुढ़िया को लेने आई हूँ।'' दादी– ''बुढ़ियाऽऽ! ओह.... अकेले आई है।'' पायल– ''नहीं, दो पुलिस वाले भी साथ लाई हूँ।''

और इसी के साथ बुढ़िया के बेटे और बहू ने भी घर में प्रवेश किया। बुढ़िया को तो जैसे साँप सूँघ गया। ये सब क्या है। गुड़िया, बुढ़िया, बेटा, बहू! तभी पायल ने आगे बढ़कर दादी को गले लगा लिया और दादी को दाँत से हल्के से दादी का कान काटते हुए बोली– ''मैं अमेरिका से बुढ़िया और गुड़िया दोनों को लेने आई हूँ।'' आज दादी को पोती की बाँहों से आजाद होने की कोई इच्छा न रही। उसे लगा पोती से हार जाने में ही सुख है। तभी उसकी नजर मेज पर रखी गुड़िया पर लगी। गुड़िया जैसे आँखें मटकाकर कह रही थी, देखा मेरी चाल सफल हुई। बुढ़िया दादी हँस दी।

– अंधेरी (पूर्व) मुंबई (महाराष्ट्र)

डरना क्या?

– अंकुश्री

उसका घर शहर से दूर था। जाने में प्राय: रात हो जाती थी। रास्ता शाम होते ही सन्नाटा हो जाता था। पत्नी घर में रहती थी, शहर से दूर गाँव के घर में। बच्चे भी वहीं रहते थे। गाँव में परिवार के अन्य लोग थे, गाँव के लोग थे। पूरा गाँव ही अपना था। गाँव में नहीं था तो डर और था तो अपनापन। उसी निडरता और अपनापन में गाँव का कसाव था। सब में एक–दूसरे का चाव था।

जाने–आने के साधनों का कुछ वर्षों में काफी विकास हो गया था। इससे गाँव से शहर की दूरी कम हो गई थी। पैदल, साइकिल और बैलगाड़ी की जगह बाईक, कार और ट्रैक्टर ने ले ली थी। साधनों की बढ़ोत्तरी से सुविधाएँ तो बढ़ गयी थीं, लेकिन सुरक्षा कम हो गई थी। असुरक्षा केवल बढ़े हुए यातायात के कारण नहीं थी, बल्कि समाज में असामाजिकता बढ़ जाने के कारण भी थी।

गाँव और शहर के बीच आने–जाने वालों की संख्या तो बढ़ती जा रही थी, लेकिन उनका आपसी संवाद घटता जा रहा था। लोग बहुत थे, लेकिन उनमें सामुदायिक बोध समाप्त होता जा रहा था। वे एक जीवन जीने लगे थे। आपसी संबंधों की गहराई और मेल–मिलाप की भावना ही गाँव की पहचान थी, जो अब समाप्त–सी हो गई थी। सामुदायिक संगठनों के प्रचार–प्रसार से लोग व्यावसायिक तो हो गये थे, लेकिन उनके बीच का सामंजस्य समाप्त हो गया था।

उस दिन गाँव से सटे शहर में एक घटना घट गई। आतंकवादियों ने शहर की घनी आबादी वाले क्षेत्र में बमबारी कर दी। इससे उसके मन को बहुत धक्का लगा। शहर में उसे डर लगने लगा। शहर में डर, गाँव जाने के रास्ते में डर। डर ने उसे बुरी तरह आ घेरा। उसके मन में असुरक्षा की भावना आ गई थी, जो बढ़ती जा रही थी। गाँव–घर में उसे कोई डर नहीं था। लेकिन उसके मन में बैठी असुरक्षा की भावना के कारण गाँव–घर में भी वह डर–डर कर रहने लगा था।

एक दिन वह गाँव में रहकर रविवारीय छुट्टी बिता रहा था। सुबह जब स्नान आदि कर पूजा करने बैठा तो उसके मन में एक विचार आया। उसने सोचा कि भगवान जब हर जगह व्याप्त हैं और उनकी मर्जी के बिना कुछ नहीं हो सकता तो फिर डरना क्या। यह विचार आते उसका मन मजबूत होने लगा। भगवान और भगवान के प्रति विश्वास के कारण उसके मन से डर धीरे–धीरे निकलने लगा।

वह सोच रहा था कि भगवान सर्वव्यापी हैं। लेकिन अभी उसके लिये डर सर्वव्यापी हो गया है। शहर में डर, रास्ते में डर, गाँव में डर, घर में डर, बाहर डर। सोये में डर, जागे में डर। ऐसी कोई जगह नहीं थी, जहाँ डर नहीं था।

डर का एक ही कारण है, सुरक्षा का अभाव।

असुरक्षा की भावना जैसे आती है, मन में डर समाने लगता है। डर का मुख्य बिन्दु मृत्यु है। जिसके मन से मृत्यु का डर समाप्त हो जाये, उसे डर किसी प्रकार नहीं सता सकता। यह बात उसके दिमाग में आते ही उसके मन में एक विचार कुलबुलाने लगा। डर का पर्याय मृत्यु है और मृत्यु निश्चित है। अर्थात् कोई डरे या नहीं, मृत्यु अपने समय पर आयेगी ही। तब उससे डरना क्या?

उसे विश्वास हो गया कि भगवान हर जगह भले नहीं हों, लेकिन डर हर जगह है। कैसा डर? मृत्यु का डर? वह इस परिणाम पर पहुँच गया था कि मृत्यु का ही दूसरा नाम डर है। उसने मन को समझाया। जब चारों ओर डर ही डर है तो डर से क्या डरना। यह विचार मन में आते ही चमत्कार हो गया। उसके मन से डर समाप्त हो गया। वह निडर हो गया। उसकी पत्नी और बच्चे पर भी उसकी बातों का प्रभाव पड़ा। मन को डर के प्रति समझा देने और निडर हो जाने के बाद उसे रात में नींद भी बड़ी अच्छी आई। वह गाढ़ी नींद में रात भर निश्चित होकर सोया। जगह वही थी, लोग वही थे, केवल विचार बदल गया था। उसका मन अब डर के बारे में नहीं सोच रहा था, निडरता के बारे में सोच रहा था।

डर का कोई घर नहीं होता। यदि होता है तो वह है व्यक्ति का मन, जहाँ वह अपने विचार के कारण डर को बैठाये रखता है। व्यक्ति के मन में ही डर का वास होता है। बैठे-बैठे मन में बात आती है कि यदि ऐसा हो तो क्या होगा। ऐसा-वैसा की परिकल्पना ही डर का विकास है परिकल्पना सोचने से बढ़ती है, जिसका सीधा संबंध मन से है। जैसे ही मन में किसी बात का भाव पैदा होने लगता है, अवसर पाकर वह विकसित होने लगता है।

कहा गया है कि जो डर गया, वह मर गया। लेकिन मरना कौन चाहेगा? तो फिर डरना क्या?

– राँची (झारखण्ड)

शिशु गीत

पुल

– डॉ. श्रीकृष्णचंद्र तिवारी 'राष्ट्रबंधु'

२ अक्टूबर १९३३ स्व. डॉ. श्रीकृष्णचन्द्र तिवारी 'राष्ट्रबंधु' जी का जन्मदिवस होता है। ०३ मार्च २०१५ को वे प्रत्यक्ष रूप से हमारे बीच से चले गए लेकिन उनकी रचनाएँ सदैव हमारे हृदय में बसी रहेंगी। – सम्पादक

रेल बड़ी तेजी से आई
धड़-धड़ शोर मचाती।
मेरे ऊपर से निकली थी
लेकिन क्या कर पाती?
यह कैसे हो गया, बहुत
अचरज में मम्मी बोली।
मैं पुल के नीचे थी मम्मी
तू है कितनी भोली।

– कानपुर (उ. प्र.)

हवलदार बचित्तर सिंह

परमवीर चक्र के पश्चात भारत का सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान है 'अशोक चक्र'। अशोक चक्र शांति काल में वीरता के लिए सैनिक अथवा असैनिक किसी भी नागरिक को अतुल्य वीरता, निर्भीकता और आत्म बलिदान हेतु सार्वजनिक तौर पर प्रदान किया जाता है। ४ जनवरी १९५२ से दिया जाने लगा यह सम्मान जीवित अथवा मरणोपरांत भी प्रदान किया जाता है। इस स्तंभ में हम पढ़ेंगे अशोक चक्र से सम्मानित प्रेरक व्यक्तियों के विषय में संक्षिप्त जानकारी–

हवलदार बचित्तर सिंह भारत के प्रथम अशोक चक्र सम्मानित व्यक्ति हैं। १० जनवरी १९१७ पंजाब का लोपो गाँव उनकी जन्मस्थली था। सरदार रूपसिंह के सुपुत्र बचित्तर सिंह अच्छे तैराक थे। शाला की पढ़ाई तो आठवीं तक ही हुई पर देशभक्ति की भावना उनमें बहुत प्रखर थी। १० जनवरी १९३७ उन्हें देशभक्ति के प्रकटीकरण का अवसर मिला सिख रेजीमेंट में प्रवेश पर कर। द्वितीय विश्वयुद्ध में अपनी वीरता दिखाने का अवसर तो उन्हें मिला ही था। देश की स्वतंत्रता के बाद जब हैदराबाद रियासत ने अपना भारत में विलय अमान्य कर दिया और निजाम को समझाने बुझाने के सारे प्रयास असफल हुए तो १३ सितम्बर १९४८ को **'आपरेशन पोलो'** के माध्यम से सीधी कार्यवाही करने के आदेश मिले।

सिख रेजीमेंट की सेकेण्ड बटालियन से बनी **'किल फोर्स'** जब नालद्रुग क्षेत्र में आगे बढ़ी तो प्लाटून की कमान हवलदार बचित्तर सिंह के हाथों में थी। भोर की चार बजे सड़क की नाकेबंदी की गई। सामने से दो वाहन आते दिखे। बचित्तर सिंह ने उन पर गोलीबारी का आदेश दिया और स्वयं उनकी ओर बढ़ चले। गोलीबारी दोनों ओर से चली और साहसी बचित्तर सिंह ने उन वाहनों को काबू में ले ही लिया।

तिलमिलाए दुश्मनों ने अपनी सुरक्षित सड़कों से गोली वर्षा आरंभ की। दिन निकल चुका था। चतुर व चौकन्ने बचित्तर लक्ष्य से थोड़ी ही दूर थे कि जाँघ पर गोलियाँ धंस गई। वे रुके नहीं रेंगते हुए अपने अचूक हथगोलों से दुश्मनम को नष्ट कर दिया। गंभीर घायल होकर भी मैदान न छोड़ा व प्लाटून का साहस बढ़ाते हुए सफलता दिलाई लेकिन स्वयं वीरगति को प्राप्त हुए।

हवलदार बचित्तर सिंह मरणोपरांत **'अशोक चक्र'** से सम्मानित होने वाले प्रथम वीर बने।

भारत माँ की जय बोलें

ढम ढम ढम ढम ढोल बजाते
गली गली मस्ती में गाते
भारत माता सबकी माता
हम इसकी संतान कहाते
द्वार विजय के हम खोलें
भारत माँ की जय बोलें

दिल में हिंदुस्तान

देश को करें रोशन
मेक इन इंडिया
के साथ

SURYA

MADE IN INDIA
LIGHTING | APPLIANCES
FANS | STEEL & PVC PIPES

आत्मनिर्भर भारत की पहचान

SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | suryalighting surya_roshni
Tel: +91-11-47108000, 25810093-96 | **Toll Free No.: 1800 102 5657**

मीनू और बीनू की जिद

– इंजी. ललित शौर्य

एक बहुत बड़ा तालाब था। उसमें बहुत सारी मछलियाँ, केकड़े और मेढक रहते थे। तालाब में रहने वाली दो मछलियों की मित्रता बड़ी प्रसिद्ध थी। उनका नाम मीनू और बीनू था। दोनों चंचल स्वभाव की थी। दिनभर तालाब में खेलतीं, उछलतीं रहतीं। तालाब में सभी उन दोनों से बहुत प्यार करते थे।

एक रात चन्द्रमा ठीक तालाब के ऊपर चमक रहा था। ऐसा लग रहा था मानो उछलकर चन्द्रमा को छुआ जा सकता हो। मीनू और बीनू की नजर चन्द्रमा पर पड़ी। दोनों चन्द्रमा को देखते ही रह गईं। चन्द्रमा का इतना सुंदर रूप दोनों ने इससे पहले कभी नहीं देखा था।

''चलो चलकर चन्द्रमा को छूते हैं। छूकर देखें चन्द्रमा कैसा लगता है?'' मीनू ने बीनू से कहा।

''ऐसे नहीं। हम एक खेल खेलते हैं। दोनों एक साथ उछलेंगे। जो पहले चन्द्रमा को छू लेगा वह विजेता होगा।'' बीनू ने कहा।

''यह अच्छा विचार है। वैसे भी जीतूँगी तो मैं ही। मैं तुमसे ऊँचा उछल सकती हूँ।'' मीनू बोली।

''अच्छा, यह तो समय बताएगा। कौन ऊँचा और दूर तक उछल सकता है। क्या तुम चन्द्रमा को छूने को तैयार हो?'' बीनू ने पूछते हुए कहा।

''हाँ, मैं तैयार हूँ।'' मीनू ने कहा

दोनों ही उछलकर चन्द्रमा को छूने का प्रयत्न करने लगीं। उछलते-उछलते उन्हें बहुत समय बीत चुका था। दोनों की साँस फूलने लगी थी। अब उनके अंदर और अधिक उछलने की शक्ति नहीं बची थी। इतना प्रयास करने के बाद भी दोनों चन्द्रमा को नहीं छू पाईं।

मीनू और बीनू दोनों थककर निढाल हो गई थी। मीकू मेंढक की नजर उन दोनों पर पड़ी। दोनों की ऐसी हालत को देखकर वह चिंता में पड़ गया।

''क्या बात हो गई। तुम दोनों इतनी थकी हुई क्यों लग रही हो? क्या किसी शिकारी ने पीछा किया?'' मीकू ने पूछते हुए कहा।

''नहीं, नहीं! ऐसा कुछ नहीं है। यह तो बस एक प्रतियोगिता के कारण हुआ है।'' मीनू और बीनू ने एक साथ कहा।

''कैसी प्रतियोगिता?'' मीकू ने पूछते हुए कहा।

''हम दोनों चन्द्रमा को छूने की प्रतियोगिता कर रहे थे। जो पहले छू लेता वही विजेता बनता। लेकिन दोनों में से कोई चन्द्रमा को न छू सका। हम जितना ऊँचा उछलते चन्द्रमा हमसे उतना ही दूर हो

जाता।'' मीनू ने कहा।

''हा.... हा.... हा....।'' मीकू जोर से हँसने लगा।

''तुम हँस क्यों रहे हो?'' बीनू ने पूछा।

''मैं तुम दोनों की मूर्खता पर हँस रहा हूँ।'' मीकू बोला।

''मूर्खता! कैसी मूर्खता?'' मीनू ने क्रोधित स्वर में कहा।

''अरे, क्रोध क्यों कर रही हो। चन्द्रमा को छूने का प्रयत्न मूर्खता ही तो है। भला कोई ऐसे उछलकर चन्द्रमा को छू सकता है। चन्द्रमा तालाब से हजारों किलोमीटर की दूरी पर है। तुम दोनों की मूर्खता से मुझे–'चूहे और पहाड़' की कहानी या आ रही है।'' मीकू ने कहा।

मीकू की बातों से मीनू और बीनू को अनुभव हो गया था कि वह दोनों मूर्खता कर रही थी। लेकिन वह चूहे और पहाड़ की कहानी जानना चाहती थी।

''चूहे और पहाड़ की कहानी हमें भी तो बताओ।'' मीनू और बीनू एक साथ बोल पड़ी।

''कहानी सुननी है? चलो सुनाता हूँ। एक बार की बात है। एक घमण्डी चूहा था। उसे अपने दाँतों पर बड़ा घमण्ड था। उसके दाँत बड़े शक्तिशाली थे। वह कोई भी चीज पलभर में कुतर लेता। एक बार वह कहीं जा रहा था। अचानक वह एक पहाड़ से टकरा गया। उसने पहाड़ को चुनौती देते हुए कहा। पहाड़ सामने से हट जाओ नहीं तो मैं अभी तुम्हें कुतर कर मिट्टी में मिला दूँगा। चूहे की बात सुनकर पहाड़ जोर–जोर से हँसने लगा। ''तुम और मुझे कुतरने की बात कर रहे हो। इतना घमण्ड अच्छा नहीं है चूहे भाई।'' पहाड़ ने कहा।

''अच्छा अभी बताता हूँ तुम्हें।'' चूहा बोला। चूहा पहाड़ को कुतरने लगा। कुछ समय वह प्रयास करता रहा। लेकिन वह असफल रहा। कठोर पहाड़ को कुतरते हुए उसके दाँत टूट गए। वह लहूलुहान हो गया। उसने पहाड़ से क्षमा माँग ली। उसे अपनी मूर्खता का अनुभव हो गया था।'' मीकू ने कहानी सुनाते हुए कहा।

''चूहा तो बड़ा मूर्ख था।'' मीनू बोली।

''हाँ, तुम दोनों भी वही मूर्खता कर रहे थे। जो कार्य संभव नहीं है उस पर परिश्रम करना मूर्खता है। ऐसे कार्य करते हुए हम व्यर्थ में अपनी ऊर्जा नष्ट करते हैं। परिणाम में हमें कुछ भी प्राप्त नहीं होता।'' मीकू ने समझाते हुए कहा।

मीनू और बीनू को शिक्षा मिल चुकी थी। दोनों ने मीकू का धन्यवाद किया। दोनों तालाब में अठखेलियाँ खेलती हुई तैरने लगी।

– मुवानी
(उत्तराखण्ड)

परीक्षा

– श्याम नारायण श्रीवास्तव

आद्या अपने पिता जी के साथ घर से दूर एक दूसरे शहर रायपुर गयी थी। वहाँ आद्या को इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश लेने के लिए परीक्षा देनी थी। वे एक दिन पहले ही रेलगाड़ी से रायपुर आ गये थे। एक होटल में रात बिताई।

सुबह जल्दी से तैयार होकर थोड़ा नाश्ता किया और एक किराए की कार से पिता–पुत्री परीक्षा केन्द्र पहुँच गये। आद्या भीतर परीक्षा देने चली गयी। उसके पिताजी परीक्षा केन्द्र के बाहर ही, वहाँ पर आये अन्य अभिभावकों के बीच समय बिताने लगे। एक बजे परीक्षा समाप्त हो गई।

अब घर वापस जाने के लिए उन्हें शाम सात बजे ट्रेन मिलेगी। आद्या के पिताजी ने कहा– ''चलो पहले किसी अच्छे भोजनालय में भोजन करते हैं। फिर होटल चलकर थोड़ा आराम करेंगे और शाम को ट्रेन से वापस घर।''

''जी पिताजी!'' आद्या ने संक्षिप्त–सा उत्तर दिया।

आद्या जैसे ही अपने पिताजी के साथ भोजनालय में भोजन करने पहुँची। बाहर ही एक भिखारी मिल गया। उसने एक हाथ फैलाकर कहा– ''बाबू जी! भूख लगी है। कुछ खाने को दे दो।''

इस पर पिताजी ने अपनी जेब में हाथ डाला और उसे कुछ रुपये देने चाहे कि बेटी आद्या ने उन्हें टोक दिया।

''पिताजी! उसने आपसे पैसे तो माँगे नहीं, फिर आप उसे पैसे क्यों दे रहे हैं?''

''उसे भूख लगी है बेटी!''

''हाँ, यह तो मैंने भी सुना, उसने यही कहा कि भूख लगी है।''

''इसीलिए तो पैसे दे रहा हूँ।'' पिता ने उत्तर दिया।

''लेकिन पिताजी! वह पैसे तो खायेगा नहीं। भूख लगी है मतलब उसे कुछ खाने को चाहिए। इसीलिए शायद वह भोजनालय के सामने खड़ा है।''

आद्या ने आगे यह भी कहा– ''एक बात और है पिताजी! आप जितना पैसा उसे देंगे, हो सकता है उससे जो खाने की सामग्री मिले। उतने से उसका पेट न भरे। आपके पैसे देने से भी यदि वह भूखा रह गया और एक समय भी खाना न खा पाए तो पैसा देने से क्या लाभ? फिर आप तो सक्षम भी हैं।''

आद्या के पिताजी चुपचाप सुन रहे थे। उन्हें अपने बेटे की बात बहुत अच्छी लग रही थी।

उन्होंने जैसे ही कहा– ''आप ठीक कह रही हो बेटी!''

आद्या फिर बोल पड़ा– ''और पिताजी! यदि कई लोगों से थोड़ा–थोड़ा पैसा एकत्र करके वह भोजन करेगा तो पता नहीं कब तक उतना पैसा एकत्र कर पायेगा। प्रत्येक आदमी पैसा देता भी तो नहीं है।''

आद्या ने जल्दी–जल्दी में बहुत कुछ कह दिया था। उसके पिताजी थोड़ा गंभीर हो गए। सचुमच बेटी ने कितनी बड़ी बात कह दी थी। हम सक्षम होते हुए भी लोगों की सही समय पर सहायता नहीं करते। कई बार तो हम समझ भी नहीं पाते कि वह क्या और क्यों माँग रहा है।?''

पिता–पुत्री में आपस में बातचीत चल रही थी कि वह भिखारी एक बार फिर बोल पड़ा।

''दीदी! भूख लगी है कुछ खाने को दो।''

आद्या के पिताजी ने कहा– ''हाँ–हाँ चलो हमारे साथ आ जाओ, तुमको भोजन कराते हैं।''

वह भिखारी ठीक से चल भी नहीं पा रहा था। लेकिन धीरे–धीरे उन लोगों के पीछे–पीछे भोजनालय के दरवाजे पर पहुँच गया।

भोजनालय के एक आदमी ने ग्राहकों के पीछे भिखारी को आते देखा, तो बिगड़ गया, ''ऐ! तुम भीतर कहाँ आ रहे हो? वहीं बाहर रहो।''

आद्या के पिता ने थोड़ा तेज आवाज में कहा– ''रुको! उसे मैंने बुलाया है। उसको भूख लगी है। एक थाली में खाना लाकर उसे भी दो और भर पेट खिलाओ, मैं उसका भुगतान करूँगा।''

वह आदमी चुप हो गया, भीतर गया। भिखारी को थाली में खाना लाकर दिया। भिखारी ने भरपेट भोजन किया और आशीष देता हुआ चला गया।

''भगवान आपका भला करें.... आपको हर परेशानियों से दूर रखें। भगवान आपको हर परीक्षा में सफल करें.... हे भगवान! ऐसा भोजन बहुत दिनों बाद किया है।''

आद्या और उसके पिताजी भी भोजन करके होटल आ गए थे। दोनों ही आज बहुत प्रसन्न थे। क्योंकि सचमुच आज वे मानवता की परीक्षा में सफल हो गए थे।

– रायगढ़ (छ. ग.)

पुस्तक परिचय

श्रीमती जयश्री श्रीवास्तव उपाख्य 'जया मोहन' बाल साहित्य जगत में प्रयागराज की पावन धरती से एक सुपरिचित नाम है। उनकी बाल-कहानियों में विविधता के रंग है, प्रस्तुति में रोचकता है, शैली में सहज सरलता है। उनकी कहानियाँ आपको लुभाते, गुदगुदाते, मनोरंजन के साथ-साथ सुन्दर संदेश भी देती चलती है। यहाँ 'जया मोहन' जी के पाँच महत्वपूर्ण बाल कहानी संग्रहों का परिचय प्रस्तुत है। इन सभी पाँचों पुस्तकों को 'रवीना प्रकाशन, सी-३१६ स्ट्रीट नं.११, गंगा विहार, दिल्ली-११००९४ ने प्रकाशित किया है।

पंखुड़ी
छ: बाल कहानियों
का संग्रह
मूल्य १५०/-

खट्टे मीठे बेर
मनोरंजक ग्यारह
बाल कहानियाँ
मूल्य १५०/-

दाने अनार के
दस बोधक, रोचक
बाल कहानियाँ
मूल्य १५०/-

कंचे रंग बिरंगें
जिज्ञासा जगाती
छ: बाल कहानियाँ
मूल्य १५०/-

21 रोचक बाल कहानियाँ
बाल जीवन के महत्वपूर्ण
रंगों को समेटे
२१ बाल कहानियाँ
मूल्य २००/-

कलरव
गुदगुदाती कुछ सिखाती
रोचक ग्यारह बाल कहानियाँ
मूल्य ८०/-
प्रकाशक- भारत प्रकाशन
३० राम पार्क,
निकट थाना साहिबाबाद
गाजियाबाद-२०१००५ (उ. प्र.)

कविता : गांधी जयंती २ अक्टूबर

बापू

– रामानुज त्रिपाठी

जीवन अर्पण किए देश हित
धीर–वीर इंसान थे बापू।
रहे शांति के एक पुजारी
सत्य अहिंसा के व्रतधारी
होती जिनकी एक बड़ाई
बिना शस्त्र के किए लड़ाई
लड़ते रहे न हिम्मत हारे
सच कितने बलवान थे बापू।
उन योगी का सिद्धमंत्र है
आज देश अपना स्वतंत्र है
सदा तपस्या और त्याग में
तपे रात–दिन विषम आग में
सबको अपने गले लगाते
ऐसे पूज्य महान थे बापू।
बापू दिए हमें आजादी
और दे गए हमको खादी
एक संत वे महापुरुष थे
जिनसे भारतवासी खुश थे
सब सपना साकार कर गए
भारत की पहचान थे बापू।
अपने युग के शांतिदूत जो
भारत माता के के सपूत जो
आओ उनको नमन करें हम
उनका ही अनुसरण करें हम
अस्थिशेष दुर्बल काया में
सचमुच ही भगवान थे बापू।

– सुलतानपुर (उ. प्र.)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०९/२०२१ | प्रेषण तिथि ३०/०९/२०२१ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है
संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

पन्द्रहवर्षीय
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

देवपुत्र अब **Jio Net** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना